संजय की कलम से ..

रूहानियत से चलें, रोब से नहीं

आजकल के जमाने में, दबाने से कोई किसी से नहीं दबता बल्कि नाजायज़ दबाने पर लोग भड़क उठते हैं और दबाने वाले का रोब या सम्मान बिल्कुल ही जाता रहता है। आजकल इसलिए ही मज़दूरों या कर्मचारियों ने संगठन (Unions) बना रखे हैं। कोई उनसे थोड़ा अकड़ कर व्यवहार करे तो एक-दो बार ही उन्हें दबा लेगा, तीसरी बार तो उनकी यूनियन उस व्यक्ति के विरुद्ध आंदोलन खड़ा कर देती है। इसी प्रकार, घर में भी यदि कोई व्यक्ति अपने से छोटों पर अधिक दबाव डालता है या सदा उनसे रोब से काम लेता है तो आखिर एक दिन वे उसके सामने बोल उठते हैं और उस व्यक्ति के प्रति उनके मन में स्नेह या सम्मान की भावना नहीं रहती बल्कि वे उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। अत: यह समझना गलत है कि रोब के बिना गाड़ी नहीं चलती या पोज़ीशन का भभका जमाए बिना लोग मानते नहीं हैं, बल्कि सही बात तो यह है कि जो दूसरों के आगे झुकता है, लोग भी उसी के सामने झुकते हैं और जो अकड़ कर रहता है, लोग उसके नीचे (Under) नहीं रहना चाहते। इसका एक स्थूल उदाहरण यह है कि जो वृक्ष झुका हुआ होता है और छाँव देता है उसके नीचे ही बड़े-बड़े धनी-मानी भी और गरीब मज़दूर भी आकर बैठना चाहते हैं, परन्तु जो वृक्ष एकदम अकड़ कर ऊँचा खड़ा रहता है, जैसे कि खजूर या बाँस का वृक्ष, कोई भी उसके नीचे बैठना पसंद नहीं करता।

दूसरों को डराना, धमकाना या अपनी पोज़ीशन से उनको दबाना दिव्य जीवन की रीति नहीं है बल्कि जो योग्य, कार्यकुशल, परिश्रमी और उद्यमी होते हुए भी दूसरों के आगे नम्र रहता है, लोग उसके आगे स्वत: ही झुकते हैं। हमारा कर्त्तव्य या लक्ष्य किसी को झुकाना नहीं है बल्कि योग्य बनकर, अहंकार को छोड़ कर कर्त्तव्य करना है और ऐसा करते हुए भी स्वयं झुक कर रहना है। जब हम ऐसा करेंगे तो हमसे नीचे कार्य करने वाले देखेंगे कि यह व्यक्ति इतना योग्य और कार्यकुशल होते हुए भी इतना निरहंकारी है कि यह छोटों से भी मिलजुल जाता है। वे अपने मन में बोलेंगे – **'अरे, यह तो इसकी महानता है, वर्ना हम तो इसके आगे कुछ भी नहीं हैं! यह हमसे स्नेह और सहानुभूति रखता है और हमें हमेशा अपनी छाती से लगाए रखता है, कभी हमें झुकने ही नहीं देता!! अहो, यह तो बहुत महान है, यह तो मनुष्य चोले में कोई फ़रिश्ता या देवता जैसा है; इसके लिए तो हम जान भी दे देंगे!'** तो हमारा जीवन वास्तव में ऐसा होना चाहिए कि हमारे प्यार के कारण लोग काम करें, न कि रोब के कारण। हम स्वयं योग्य बनें, स्वयं अपने हाथों से कार्य करें, दूसरे को कार्य सिखायें, उनके कार्य में मददगार बन जाया करें, रूहानियत में रह कर्म करें फिर देखें कि क्या रोब डालने या पोज़ीशन जतलाने की ज़रूरत रहती है? ❖

अमृत-सूची

- बुद्धि की महीनता (सम्पादकीय)..... 2
- पुरुषोत्तम संगमयुग और..... 4
- शिव की गोद समाओ (कविता)..... 6
- मेरी खुशी कभी जा नहीं..... 7
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 9
- इन्द्रियों पर राज्य करना.....10
- शिवरात्रि - आध्यात्मिक पहलू का विवेचन..... 12
- शिव अवतरण (लघु नाटिका).....16
- समय -चक्र (कविता)..... 17
- धूल में छिपा हीरा..... 18
- थको नहीं राजयोगियो.....21
- ज्ञान सागर और पानी 24
- असत्य से सत्य की ओर..... 25
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- मृत्यु पर विजय.....30
- शिव जयंती (कविता)..... 31
- सचित्र सेवा समाचार..... 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	70 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	70/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

इंटरनेट द्वारा ज्ञानामृत शुल्क भेजने के लिए डाकघर की वेबसाइट इस प्रकार है – www.indiapost.gov.in

सम्पादकीय

बुद्धि की महीनता

मानव जीवन की सफलता या असफलता उसकी निर्णय शक्ति पर निर्भर करती है। निर्णय करने की योग्यता बुद्धि में है। इतिहास में बौद्धिक उत्कर्ष तथा बौद्धिक अपकर्ष - दोनों प्रकार के उदाहरण मिलते हैं। मोहम्मद तुगलक इतिहास में पढ़े-लिखे मूर्ख सुलतान के रूप में प्रसिद्ध है। इन्होंने दिल्ली राजधानी को देवगिरी में स्थापित करने का निर्णय लिया तथा सर्व दिल्लीवासियों को देवगिरी जाने का आदेश दिया। दिल्ली के लोगों ने अपनी अनिच्छा व्यक्त की लेकिन सुलतान ने तीन दिन के अंदर दिल्ली को खाली करने का आदेश दे दिया। लोगों को नए स्थान पर कष्ट उठाने पड़े। कई रास्ते में और कई पहुँचने पर मरे। अपनी योजना को फेल होते देख सुलतान ने लोगों को वापस लौटने को कहा। बहुत सारे लोग वापिस लौटते समय भी मर गये। इस प्रकार जान-माल का बहुत नुकसान हुआ। दूसरी तरफ, राजा विक्रमादित्य बहुत ही बुद्धिवान, न्यायप्रिय, प्रजाप्रिय, नीर-क्षीर विवेकी राजा के रूप में वर्णित है। बेताल पच्चीसी और सिंहासन बत्तीसी उनकी उत्कृष्ट बौद्धिक योग्यता को आज भी प्रमाणित कर रही हैं।

आत्मा की तीन सूक्ष्म शक्तियों में बुद्धि एक महत्त्वपूर्ण शक्ति है जो मन के विचारों को सही दिशा देने के निमित्त है। मन का स्वभाव है कि वह किसी भी घटना को देखकर तुरंत प्रतिक्रिया करता है लेकिन श्रेष्ठ बुद्धि उस प्रतिक्रिया की जाँच-पड़ताल कर उसे उचित मार्गदर्शन देती है। **यह मन पर कसी हुई एक प्रकार की लगाम है जो उसे स्वेच्छाचार से बचाती है। यह मानव मन के विचारों रूपी ख़ज़ाने का पहरेदार है जो विचार रूपी पूंजी को उचित कार्यों में नियोजित करवाती है। जैसे एक फल में कई प्रकार के पोषक तत्व आयरन, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट आदि होते हुए भी देखने में नहीं आते हैं। सूक्ष्म यंत्रों द्वारा शरीर विज्ञानी इन्हें जान पाते हैं, उसी प्रकार आत्मा की तीनों सूक्ष्म शक्तियाँ – मन, बुद्धि और संस्कार अलग-अलग रूप से देखने में नहीं आतीं परन्तु आध्यात्मिक प्रयोगशाला में इन्हें सूक्ष्म चिन्तन के द्वारा अनुभव किया जा सकता है।** मान लीजिए, एक व्यक्ति कहीं जा रहा है। रास्ते में एक अनाथ बालक को रोते देख उसका मन पसीज जाता है। वह स्वयं भी रोने जैसा हो जाता है (यह मन की तुरन्त प्रतिक्रिया है) परन्तु बुद्धि कहती है, रोने से क्या होगा, इसकी मदद कर, इसे सहारा दे (यह बुद्धि का मन पर नियंत्रण है)। अब उस व्यक्ति के विचारों में निर्णायक मज़बूती आती है और वह मदद के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने लगता है। तभी उसके संस्कारों में दबी हुई दस वर्ष पुरानी स्मृति प्रकट हो जाती है जब उसने एक बेसहारा बालक को अपने अमीर मित्र के घर नौकर रखवा दिया था, आज वह बालक अपने पैरों पर खड़ा हो चुका है। सहयोग का यह पिछला संस्कार उसे पुन: परोपकार के कार्य को दोहराने के लिए प्रेरित करता है और वह बालक को अपने साथ ले लेता है। इस प्रकार इस नेक कार्य में उसकी तीनों शक्तियाँ संलग्न हैं परन्तु बाह्य रीति से तो यही कहा जाएगा कि वह व्यक्ति बड़ा परोपकारी है। इन तीनों में भी बुद्धि की मुख्य भूमिका होती है। विचारों या संस्कारों का नियंत्रण इसी पर निर्भर है। आमतौर पर बुद्धि को मोटी या महीन बुद्धि कहकर उसकी योग्यता की जानकारी दी जाती है। सूक्ष्म सत्ता बुद्धि का इन स्थूल विशेषणों (मोटी, महीन) से कोई संबंध नहीं है लेकिन इनको माध्यम बना इसे जानना सरल हो जाता है।

क्या है बुद्धि की महीनता?

1. कोई भी महीन चीज़ कहीं भी समायोजन कर सकती है। उदाहरणार्थ, एक टेढ़ा-मेढ़ा पत्थर या मिट्टी का ढेला अपने अनुकूल स्थान पर तो फिट बैठ सकता है पर सब जगह नहीं। पीसकर बारीक बना दिये जाने पर वह किसी भी छोटे मुँह वाले बर्तन में, संकरी जगह में रखा जा सकता है। इसी प्रकार महीन बुद्धि

वाला व्यक्ति वह कहलाता है जो कैसी भी परिस्थिति में अपने आपको समायोजित कर लेता है। उसमें लचीलापन होता है इसलिए मुड़ना, झुकना, बदलना ये सब बातें उसे आसान लगती हैं। सामना करने का उसमें साहस होता है, वह कभी घबराता नहीं बल्कि बात की गहराई में जाकर छिपे हुए कल्याणकारी पहलू को जान लेता है। वह आशावादी रहता है। जैसे यादगार शास्त्र रामायण में हनुमान जी के चरित्र में दिखाते हैं कि समुद्र पार करते समय उसके सामने सुरसा राक्षसी आई तो उसने मच्छर के समान सूक्ष्म रूप बना लिया और उसके कपाल में से चक्कर लगाकर सुरक्षित बाहर आ गया। जब कोई राक्षस सामने आया तो विशाल रूप बनाकर उस का सर्वनाश कर दिया। हनुमान जी के माध्यम से, समय और परिस्थिति अनुसार स्वयं को ढालने की योग्यता के ये प्रतीक दिखाए गए हैं।

2. महीन चीज़ पकड़ में नहीं आती है जबकि मोटी चीज़ को पकड़ना और बंधन में बांधना सरल होता है। महीन बुद्धि वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक बंधन में नहीं बंधता। इन सबके बीच में रहते हुए भी वह मन से न्यारा रहता है। लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, आकर्षण, विकर्षण उसके मन पर हावी नहीं हो सकते जबकि मोटी बुद्धि का व्यक्ति बातों के उतार-चढ़ाव, व्यक्तियों के भाव-स्वभाव तथा परिस्थितियों के पाश में बंधता रहता है।

3. महीन चीज़ हल्की होती है। इसी प्रकार महीन बुद्धि वाला व्यक्ति भी हल्का होता है, सब प्रकार के व्यर्थ बोझ से मुक्त रहता है। जैसे भारी चीज़ पानी में डूब जाती है और हलकी चीज़ तैरती रहती है, उसी प्रकार **जिसकी बुद्धि महीन और हलकी होती है वह भी संसार सागर में कमल समान न्यारा रहता है, उलझता नहीं। संसार में रहकर भी संसार को अपने भीतर प्रवेश नहीं होने देता। बोझ मुक्त होने के कारण ही उसमें मोल्ड होने की शक्ति होती है। मोल्ड होना अर्थात् नर्माई। नर्माई के साथ गर्माई का संतुलन चाहिए। भौतिक जगत में, किसी भी चीज़ को गर्म करने पर वह नर्म हो जाती है। नर्म चीज़ को ढालना सरल हो जाता है। लोहा गर्म होकर लचीला हो जाता है, पिघल जाता है फिर मनचाहे आकार में ढाला जाता है।** खाद्य पदार्थ गर्मी देकर पकाने पर खाने योग्य बन जाते हैं। आध्यात्मिक जगत में भी लचीलापन लाने के लिए गर्मी का प्रयोग होता है। किसी के कड़े संस्कारों को गर्मी के सहयोग से लचीला बनाया जा सकता है। बहुत करके लोग गुस्से को गर्मी कहते हैं परंतु यहाँ गर्मी का अर्थ गुस्सा नहीं है। ज्ञान-सूर्य परमात्मा पिता से बुद्धि का योग जोड़ने से आत्मा में जो शक्तियों का करंट या प्रवाह चालू हो जाता है इससे आत्मा के संस्कार नर्म हो जाते हैं, उसका हठीला स्वभाव लचीला हो जाता है। वह समय और स्थिति के अनुकूल ढलने लगता है। सर्वशक्तिमान परमात्मा स्वयं भी तो लचीले हैं तभी तो वे कभी भी, कहीं भी, किसी भी कल्याणकारी भाव को लेकर भक्तों और बच्चों के सम्मुख प्रकट होकर या अव्यक्त रूप द्वारा उनकी मनोकामना पूर्ण कर देते हैं। उनसे जब बुद्धि का योग जुटता है तो मानव आत्मा में भी मोल्ड होने की शक्ति आ जाती है और सर्व के प्रति कल्याण का भाव सर्वोपरि हो जाता है। कल्याण भावना हद की भी हो सकती है पर वह नुकसान करती है। इससे हम किसी एक या कुछ लोगों के भले के लिए इतने अड़ जाते हैं कि दूसरों के सामने विघ्न खड़े कर देते हैं। परन्तु परमात्मा पिता सर्वेषु कालेषु अर्थात् सदा, सर्व के प्रति कल्याण भावना रखते हैं, ऐसी भावना हमें भी निरहंकारी अर्थात् नम्रचित्त बना देती है। महीन बुद्धि आत्मा में नर्माई (नम्रता) तथा गर्माई (ईश्वरीय शक्ति) का संतुलन होता है। महीन बुद्धि वाला बनना अर्थात् महान बनना, हर बात में विजयी बनना, समाधान स्वरूप और निवारण स्वरूप बनना। बुद्धि की महीनता और हलकापन लाखों की भीड़ में चमकने वाला आकर्षक व्यक्तित्व बना देते हैं।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

पुरुषोत्तम संगमयुग और आर्थिक समस्या के समय धन सफल करने की युक्तियाँ

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परमपिता शिव परमात्मा ने हम बच्चों को समय का ज्ञान दिया है और भविष्य के लिए उत्कृष्ट तैयारियाँ करने के लिए युक्तियाँ भी बताई हैं। परंतु मेरा अनुभव यह है कि हम वर्तमान को सफल नहीं करते क्योंकि भूतकाल भूत बनकर परेशान करता रहता है जिस कारण हम औरों की गलतियों को याद करते रहते हैं तथा उनकी अच्छी बातें भूल जाते हैं। शिव बाबा ने बताया है कि सभी मनुष्य संपूर्ण नहीं हैं, सबमें कुछ न कुछ कमियाँ हैं। वर्तमान काल को सफल करने के लिए शिव बाबा ने फुलस्टॉप की विधि बताई है, उसका उपयोग अच्छी रीति करना है और दूसरों के जीवन की अच्छाइयों को ही देखना है, इससे परचिंतन कम हो जायेगा।

देखने में आता है कि हमारा बहुत सारा समय वर्तमान की समस्याओं के समाधान में नष्ट हो जाता है जिस कारण भविष्य के लिए जितना सफल करना चाहिए उतना नहीं कर पाते। कई चीज़ों या व्यवहार में हमारा धन फालतू खर्च होता है। जब तक उसकी बचत नहीं करेंगे तब तक भविष्य के लिए धन को सफल नहीं कर सकेंगे।

दैवी परिवार के कई भाई-बहनें अपने वसीयतनामे में बहुत करके यही लिखवाते हैं कि उनके धन को उनके वारिसों में कैसे बाँटा जाए। परंतु यह धन भविष्य के जन्मों में कैसे काम आए, इसके बारे में कोई प्रबंध नहीं करते। दैवी परिवार की तीन आत्माओं ने अपने धन को कैसे सफल किया, सभी भाई-बहनों की जानकारी के लिए मैं वे प्रसंग यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ –

पहला प्रसंग सन् 1962 का है। मुंबई में वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर राधी नाम की एक सिन्धी बुजुर्ग माता आती थी। वह बाल विधवा थी, उसके पास इतना धन नहीं था, पढ़ी-लिखी भी ज़्यादा नहीं थी। सेन्टर पर आकर सेवा करती थी। धारणाएँ बहुत अच्छी थीं। भविष्य प्रालब्ध बनाने के लिए उसने अपने वसीयतनामे में हमसे लिखवाया कि मेरे मरने के बाद मेरा सारा धन शिव बाबा के यज्ञ में स्वाहा हो जाये। उसके पास लगभग 1200 या 1500 रुपये थे और पहनने के कपड़े थे। थोड़े समय के बाद उसका शरीर छूट गया। उस जमाने में ऐसे शरीर छोड़ने वाले दैवी परिवार के सदस्यों को संदेशी के तन द्वारा साकार लोक में मिलने के लिए बाबा भेजते थे। सेन्टर पर उनके निमित्त भोग लगाया गया और शिव बाबा ने उस आत्मा को संदेशी के तन में भेजा। मैंने पूछा, राधी माता, आपका जन्म कहाँ होने वाला है, बाबा ने कुछ बताया है? राधी माता ने जवाब दिया, बाबा ने कहा था कि तुम्हारा जन्म बहुत बड़े राजाई परिवार में होने वाला है, अभी से ही तेरे स्वागत के लिए उस परिवार में बहुत-सी तैयारियाँ हो रही हैं। मैंने पूछा, आपने तन-मन से इतनी सेवा तो की नहीं और धन भी इतना नहीं था जो आप सफल कर सको तो फिर आपको ऐसे राजाई परिवार में जन्म का सौभाग्य कैसे मिला? राधी माता ने जवाब दिया, मैंने भी यही प्रश्न शिव बाबा से पूछा था तो बाबा ने समझाया कि तूने 100% धन सफल किया और नष्टोमोहा की परीक्षा में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त की। मैंने उनसे पूछा कि आपका जन्म कहाँ होने वाला है, क्या बाबा ने आपको यह भी बताया है? उन्होंने कहा, ''जब मैं नीचे आ रही थी तब शिव बाबा ने मुझे कहा कि तुम्हें नीचे रमेश बच्चा मिलेगा और तुम्हारे जन्म के बारे में पूछेगा, मैं तुम्हारी बुद्धि का ताला बंद नहीं करता हूँ, तुम्हारा जन्म कहाँ होने वाला है इसकी स्मृति तुम्हें रहेगी और अगर बताना चाहो रमेश को तो बता भी सकती हो। मैंने बाबा से सवाल पूछा कि क्या मैं रमेश भाई को मेरा जन्मस्थान बताऊँ? बाबा ने कहा, आप पूछती हो तो मैं कहता हूँ कि यह नहीं बताना चाहिए क्योंकि यह सृष्टि रूपी ड्रामा रियल है।'' तब मेरे प्रश्न के उत्तर में राधी माता ने यही कहा कि

ड्रामा रियल है, इसलिए मैं आपको अपने जन्म का स्थान नहीं बता सकती परंतु मेरी प्रालब्ध अर्थात् राजाई परिवार का जन्म अवश्य है। इस प्रकार धन की परीक्षा में अर्थात् नष्टोमोहा और देह के संबंधों के बंधन से मुक्त होकर श्रेष्ठ भविष्य का निर्माण करने में राधी माता जैसी बाल विधवा सफल हुई।

उन्हीं दिनों उसी वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर यज्ञ का एक पुराना परिवार भ्राता गिरधारी लाल और सीता माता आते थे। यह युगल शुरू में यज्ञ में समर्पित थे परंतु बाद में कई सामाजिक प्रश्नों के कारण गृहस्थ व्यवहार में वापस गए और धंधे आदि में बहुत धन कमाया। मैंने कई बार उनको अपना तन-मन-धन सफल करने के लिए कहा था। उनको माउंट आबू का निमंत्रण भी दिया था परंतु अपने धंधे के कारण उनको फुर्सत नहीं मिलती थी। फिर उनका शरीर छूट गया। परिवार ने उनकी याद में भोग लगवाया। शिवबाबा ने उनकी आत्मा को संदेशी के तन में भेजा। तब सामने उनके रिश्तेदार बैठे थे और मैं थोड़ी दूर कोने में बैठा था। उनकी आत्मा ने चारों ओर दृष्टि दी और मुझे आगे बुलाया। उस समय टेपरिकॉर्डर नहीं था, ग्रामोफोन का रिकॉर्ड बजता था। गिरधारी की आत्मा ने रिकॉर्ड बजाने वाली बहन को कहा कि 'क्षमा करो मेरी गलती को' यह गीत दो बार बजाओ। फिर दोनों हाथों से क्षमा मांगने के भाव से मुझे दृष्टि देता रहा और रोता रहा। उसकी आँखों से अर्थात् संदेशी की स्थूल आँखों से पश्चाताप की अश्रुधारा छह मिनट तक बहती रही।

मैंने पूछा, गिरधारी लाल, आप क्यों रोते हो? उसने कहा, ''रमेश भाई, मुझे रोने दो, मैं क्षमा मांगने के लिए आया हूँ। जब मैं सूक्ष्मवतन में बाबा के पास गया तब मैंने बाबा से पूछा, बाबा, आप मुझे भी श्रेष्ठ भाग्यवान परिवार में जन्म देंगे ना? शिवबाबा ने मुझसे पूछा कि मैं तुमको इतना श्रेष्ठ भाग्य क्यों दूं तो मैंने कहा, एक साधारण माता (राधी माता) को आपने रॉयल परिवार में जन्म दिया है तो मैं तो करोड़पति था तो मुझे तो बहुत श्रेष्ठ भाग्य मिलना चाहिए। तब शिव बाबा ने कहा, भविष्य का जन्म, तुम करोड़पति थे, इस आधार पर नहीं बनेगा बल्कि तुमने कितना सफल किया उस आधार पर बनेगा। अभी तो तेरे धन के मालिक तेरे बच्चे बन गए हैं तो मैं उस धन का फल तुझे कैसे दूं जो धन बाबा के भंडारे में जमा हुआ ही नहीं। रमेश बच्चे के द्वारा मैंने तुमको बहुत बार इशारा दिया कि अपने तन-मन-धन को सफल करो परंतु तुम सफल नहीं कर पाये। जो भी थोड़ा बहुत भाग्य बनाया है उसके आधार पर साधारण परिवार में जन्म मिलेगा। तब मैंने शिव बाबा को कहा कि बाबा, मुझे नीचे भेजो संदेशी के तन में, मैं आपसे माफी रमेश के द्वारा ही माँगूंगा क्योंकि आपने रमेश के द्वारा ही मुझे सावधानी दी थी और मैं अपने बच्चों को भी कहकर आता हूँ कि मेरे पीछे धन को थोड़ा सफल करें। बाबा ने कहा, भले जाओ परन्तु अभी अगर आपके बच्चे आपके कहने पर धन सफल करें तो भी आपका जन्म तो साधारण घर में निश्चित हो गया है और बच्चों द्वारा सफल किए गए धन का प्रालब्ध आपको आगे चलकर ही मिल पायेगा'' – इतना कहकर उन्होंने सामने बैठे अपने बच्चों को कहा कि मेरे पीछे से मेरा धन सफल करना और मुझे कहा कि रमेश भाई, मेरी यह कहानी सबको बताना कि मैं कैसे करोड़पति से रोडपति बन गया। **यह भी कहा कि सबको संदेश देना कि सब अपने तन-मन-धन को सफल करें और राधी माता जैसे रोडपति से करोड़पति बनें।**

ऐसे ही एक तीसरी आत्मा थी जो सेन्टर पर आती थी। उनका भी अपना धंधा था, पत्नी ने शरीर छोड़ दिया था और बच्चे भी नहीं थे। कई बार हमें कहते थे कि मुझे अपना वसीयतनामा लिखवाना है और मेरा जो भी धन है उसे सफल करना है। परंतु कुछ कर नहीं पाए और अचानक ही सड़क दुर्घटना में उनका शरीर छूट गया। बाद में उनकी आत्मा को भी संदेशी के तन में बाबा ने भेजा और आकर हम सबसे मिले। उसने भी बाबा को कहा, बाबा, मुझे संदेशी के तन में नीचे भेजो, वहाँ रमेश भाई बैठे होंगे, उनको मैं कहूँगा कि मेरा धन पूरा ही बाबा के भंडारे में सफल करना और मैं कागज़ के ऊपर हस्ताक्षर करके

आऊँगा। तब शिव बाबा ने मुझे कहा कि लौकिक और ईश्वरीय दोनों ही कानून इस बात को नहीं मानेंगे कि अभी तुम ऐसे लिखकर और हस्ताक्षर करके आओ। ईश्वरीय कानून तो यही है कि तुमने जीते-जी कितना सफल किया, उसके आधार पर ही तेरा भाग्य बनेगा। इस प्रकार उस भाई ने भी हमको यही शिक्षा दी कि जीते जी ही अपना भाग्य बना सकते हो।

इसी संदर्भ में एक चौथी बात भी लिखना चाहता हूँ कि जब हमने योग की प्रदर्शनी बनाई तब हमने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा और अनुरोध किया कि योग की प्रदर्शनी का अंतिम चित्र आप बनाइए और उसकी लिखत भी आप ही बनाइए क्योंकि मैं जानता था कि ब्रह्मा बाबा बहुत अच्छे कवि भी थे और ईश्वरीय यज्ञ के आदिकाल में आदि कवि बनकर बहुत से गीत ब्रह्मा बाबा ने लिखे थे। तो ब्रह्मा बाबा ने अंतिम चित्र की डिजाइन बनाई कि कैसे सृष्टि अपनी मृत्यु शय्या पर है और ऊपर से एटम बम, हाइड्रोजन बम गिर रहे हैं। ब्रह्माकुमारी बहन कुम्भकर्ण के कानों में ईश्वरीय ज्ञान दे रही है परंतु ज्ञान दूसरे कान से निकल रहा है। नीचे ब्रह्मा बाबा ने लिखत लिखी – **आपका भाग्य आपके हाथों में है, इसे ना कोई बना सकता है, ना बिगाड़ सकता है अर्थात् हमारे भविष्य के हम ही मास्टर ब्रह्मा हैं।** यह संदेश ब्रह्मा बाबा ने सबके लिए लिखवा कर भेजा। इसी योग की प्रदर्शनी के द्वारा विश्व सेवा शुरू हुई।

इस प्रकार से वर्तमान सीजन की मुरलियों में भी बाबा हम बच्चों को सावधानी दे रहे हैं कि अचानक का खेल कभी भी हो सकता है और अपने भाग्य को बनाने में कहीं **टू लेट** का बोर्ड न लग जाये और इसलिए ही अलबेलेपन और आलस्य का त्याग कर अपने श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण कर लो। दैवी परिवार अपना श्रेष्ठ भाग्य बना ले – इस निवेदन के साथ मैंने ये पुरानी बातें लिखी हैं। अब तो दैवी परिवार बड़ा हो गया है। अब बाबा संदेशियों के तन में एडवांस पार्टी में गई हुई आत्माओं को भेजते भी नहीं हैं। ये पुरानी बातें दैवी परिवार के नए-नए भाई-बहनों को मालूम भी नहीं होंगी इसलिए फिर से मैंने लिखी हैं।

संगमयुग ही सारे कल्प में ऐसा श्रेष्ठ समय है जब हम श्रेष्ठ भाग्य बना सकते हैं और ऐसे आर्थिक अव्यवस्था के समय अगर हम अपना श्रेष्ठ भाग्य नहीं बनायेंगे तो कब बनायेंगे और इसलिए ही जो योग की प्रदर्शनी का अंतिम चित्र था उसमें अंतिम शब्द जो ब्रह्मा बाबा ने लिखवाये, वे थे – ''अब नहीं तो कब नहीं''। ब्रह्मा बाबा की इस चेतावनी की सूचना फिर से सबको दे रहा हूँ।❖

शिव की गोद समाओ

ब्रह्माकुमार अवनीश 'निर्दोष', रेनूकुट, सोनभद्र (उ.प्र.)

पाँच विकारों की यह दुनिया, बुद्धि से अब त्यागो
सतयुग में गर जाना है तो भाई अब तो जागो
देखो दुनिया की हालत जर्जर हुई पड़ी है
संकेत समझ लो माया का, शामत की यही घड़ी है
श्रीमत पे खुद भी चल लो, औरों को आप चला दो
परमपिता की यादों से सारे पाप जला दो
अगर बात को ना समझे तो अंत घड़ी पछताओगे
नैनों से लहू बहाओगे तब भी कुछ ना पाओगे
इसलिए खुद ही सोचो, हमको अब क्या करना है
अमरलोक में जाना है या कलियुग में ही मरना है
सोच-समझ लो अंदर से, जल्दी से निर्णय ले लो
संतान बनो शिव बाबा की, जीवन से ना खेलो
संदेश यही शिव बाबा का अब पास मेरे आ जाओ
बनकर के पावन योगी, स्वर्ग धरा पे लाओ
बात अगर उसकी माने तो राजाई पद पायेंगे
सुनके अनसुना करने से ढेर सजायें खायेंगे
अंतिम यह संदेश तुम्हें, अब सावधान हो जाओ
वक्त कयामत का आया अब शिव की गोद समाओ

मेरी खुशी कभी जा नहीं सकती

• दादी जानकी

भक्ति मार्ग में बड़े-बड़े धनी, मानी गुरुद्वारे में जाकर झाड़ू लगाते हैं। बाबा के साथ हम भी अनाज साफ करते थे, सब्जियाँ काटते थे। बाबा की सब्जी काटने की गति हमसे तीन-चार गुणा ज़्यादा होती थी। अनाज भी तीव्रता से साफ करते थे। आधा बोरी अनाज चुटकियों में साफ कर देते थे। बाबा हमारे साथ कपड़े धुलाई करते थे। जब हम (अविभाजित भारत में) ओम मण्डली में, कराची में थे तब रात को भट्ठी चढ़ती थी कपड़ों की, अमृतवेले दो बजे विश्वरत्न दादा भट्ठी से गर्म-गर्म कपड़े निकालता था, बाबा सटके लगाता था कपड़ों को, उसके बाद उनकी धुलाई होती थी। हम बहनें निचोड़ती और सुखाती थीं। कोई फिर इस्त्री करते थे। तीन बजे से पाँच बजे सुबह तक यह सेवा चलती थी। बृजकोठी में भी गेहूँ साफ करते थे, घर में ही पीसते थे। बाबा ने शुरू से लेकर सब प्रकार की सेवा करनी सिखाई। कराची में तो गेहूँ धुलाई भी होता था, फिर अच्छी तरह सुखाते थे। आटा बहुत अच्छा बनता था। फिर बाबा मक्खन निकलवाता था। मक्खन-रोटी बच्चों को खिला देता था। कराची में हम चाय नहीं पीते थे। एक-दो भाई ऐसे थे, जो चाय नहीं छोड़ सके पर यज्ञ को ही छोड़ कर चले गए। जब आबू में आए तो बहुत ठण्डी के कारण बाबा ने खुद चाय पीनी सिखाई। कराची में मना किया था आदत से बचाने के लिए परन्तु आबू में शुरू किया यहाँ की ठण्डी जलवायु से राहत दिलाने के लिए। लौकिक में बाबा मुझे जानता था पर यज्ञ में आने के बाद हमने कोई लौकिक बात किसी के साथ कभी की ही नहीं। कइयों की सगी माता, सगी बहनें साथ में रहीं, फिर भी आपस में कभी लौकिक बातें नहीं कीं।

बाबा मुरली में जो सुनाता है उसका मंथन करो, धारण करो फिर दूसरों को समझाओ। ऐसे बच्चे बाबा को अच्छे लगते हैं। मंथन करना माना मक्खन खाना। मक्खन ताकत देता है, छाछ ठण्डक देती है। उन दिनों खाना बड़ा सादा होता था। एक सब्जी और दो चपाती। आज की तरह दाल, चावल, दो सब्जियाँ, हलवा आदि नहीं होते थे। बड़े सादे रहते थे। जब मैं लंदन गई, छोटे से कमरे में हम पाँच जन पट में सोते थे। पट में सोने के बाद मैं उठ नहीं सकती हूँ, तो क्या किया? लंदन में पुरानी चीज़ें घर के बाहर फेंक देते हैं। किसी ने नया दरवाजा फेंका था। उन्होंने उसे चार पाये लगाकर मेरे लिए बैंच बनवा दिया, उस पर सोती थी। पाँच साल उस पर सोई, उसी पर बैठ क्लास कराती थी। दिन में बिस्तरा समेट उसके नीचे रख देती थी। रात को उसी पर सो जाती थी। लोग समझते हैं, लंदन में रही है पर कैसे? त्याग-तपस्या का जीवन बड़ा अच्छा लगता था। किचन बहुत छोटी थी। गैस पर खाना बनता था। अस्थमा होने के कारण हीटर भी नहीं जलाती थी। बुधवार शाम को नियम से फ्रिज को साफ करती थी, अगले दिन सतगुरुवार का भोग जो लगना होता है।

बाबा के साकार में होते हुए ही शिव बाबा को भोग लगाना प्रारंभ हुआ था।

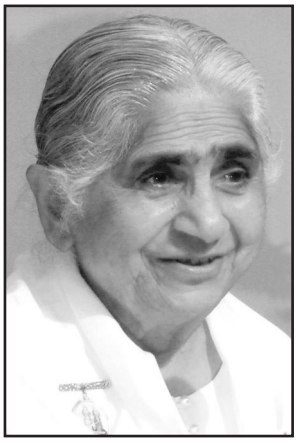

कराची में भोग नहीं लगाते थे। बाबा का ही खाते थे, बाबा ने ही समर्पण किया था। लेकिन जब सेवा पर गए तो थोड़ा औरों का पैसा आने लगा। बाबा को कहा, बाबा, हम कैसे इनका खा पाएंगे। बाबा ने कहा, बच्ची, आपके पेट में ब्राह्मण (शुद्ध सोच वाले) का ही अन्न जा सकता है, क्षत्रिय (अशुद्ध सोच वाले) का नहीं। परंतु जब तक कोई ब्राह्मण बने ना। दिल्ली में मैं, मनोहर दादी और मनमोहिनी दीदी – तीनों इकट्ठे रहे। किसी ने तीस रुपये दिए, वो भी कुंभ मेले में भेज दिये, हमने नहीं प्रयोग में लाये। एक बुजुर्ग था, दादा कहते थे उसको, सनातन धर्म का नामी आदमी था। उसको ज्ञान-योग कराने छह मास लगातार उसके घर में जाती रही। एक दिन अपनी पुत्री को कहा, बेटी, सेन्टर पर अनाज की बोरी, घी का डिब्बा भेज दो। बाबा को समाचार दिया और कहा, बाबा, हम ये चीज़ें नहीं रखेंगी। वो सब मधुबन बेहद यज्ञ में सफल हो गया। एक अन्य व्यक्ति की सेवा की। उसने साबुन, घी भेजा। हमने कहा, पहले मधुबन भेजो।

उसने 21 डिब्बे मधुबन भेजे, हमने एक डिब्बा अपने पास रखा। उस समय तक घी नहीं खाया था। जब बाबा ने देखा, बच्चियाँ सेवा कर रही हैं तो दर्जन भर बहनें हमारे पास भेज दीं। एक माता दूध भेजती थी। एक बार हमने कहा, दूध के बदले सब्जी मिले तो अच्छा। उसने दूध ही देना बंद कर दिया। मम्मा-बाबा को समाचार लिखा, मम्मा ने कहा, यह भूल की। भावना जिसकी जिस चीज़ में होती है, देने वाला वही देगा।

एक आने में सेर भर, छोटी-छोटी गोलियों जैसे आलू मिलते थे। क्वीन मदर (दीदी मनमोहिनी की माता जी) बहुत अच्छा खाना बनाती थी। रोटी को घी नहीं लगाया जाता था। कपड़े में लपेटकर रखती थी, दो-चार आलू और बाकी रस, उसके साथ चपाती खा लेते थे। उसी से सेवायें शुरू हुई हैं। अभी तो देखो। सेवा बाबा ने कराई, फल आप खा रहे हो। माली बगीचा लगाता है, मेहनत करता है, फिर चारों ओर फल, फूल, सब्जियाँ देखता है तो खुश हो जाता है। मेहनत का बल और फल मिलता है। उस समय खुशी बहुत रहती थी। कमलानगर सेन्टर पर एक बार कोई आया, देखने लगा, इनका भण्डारा कहाँ है? भण्डारे में एक आटे का कनस्तर और लकड़ी की मसालदानी में थोड़ा-सा मसाला था, बस। उसने कहा, यह क्या भण्डारा है? हमने कहा, हमारा ऐसे ही चलता है, हम ऐसे किसी का खाएंगे नहीं। भोग की प्रथा प्रारंभ हुई तब बाबा कहते थे मम्मा को, आप खिचड़ी बनाओ। मम्मा-बाबा खुद बैठ खाना बनाते थे और शिव बाबा को भोग लगाते थे। कोई कुछ देता था तो भण्डारे में गया, भोग लगाया, तब हम खाते थे। फिर तो सारे भारत में सेन्टर खुलते गये। हमारे पास कुछ सामान अच्छा होता नहीं था, बाजरे या ज्वार का ढोडा (मोटी रोटी) बनाकर, थोड़ा गुड़ रखकर दे देते थे भोग में। कोई आटा, चीनी, घी नहीं होता था जो हलवा भी बना देवें। **वो जो सुख पाया है, बाबा ने प्यार से खिलाया, हड्डी सुख भरा, वह खुशी आज भी काम कर रही है। चाहे कुछ भी हो जाए; घर, धन, जन, तन सब कुछ चला जाये पर मेरी खुशी जा नहीं सकती। खुशी की ऐसी नींव मजबूत की। खुशी का ऐसा भाग्य दिया है बाबा ने। हमें खुश देख लोग सोचें, इनको ऐसी खुशी कहाँ से मिली?**

आज किसी ने मेरे से संतुष्टता का थोड़ा स्पष्टीकरण देने को कहा। **वास्तव में, संतुष्ट वह है जो सच्चा है। रॉयल्टी और रियल्टी है उसमें। कहीं आँख नहीं डूबती कि मुझे यह चाहिए। स्वयं भगवान का ज्ञान मिल रहा है भगवान-भगवती पद पाने के लिये। भक्ति में भी कोई पुत्र मांगता, कोई दर्शन मांगता। कौन-सा भक्त अच्छा? भगवान ने ज्ञान देकर सब अंधकार मिटा दिया, हमको और क्या चाहिए?**

नियम-मर्यादा पर चलने वाले, आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार रहने वाले को बाबा की बहुत दुआयें मिलती हैं। जिसके पास दुआयें हैं, उनसे कौन पूछ सकता है कि क्या तुम संतुष्ट हो! भगवान के घर बैठे हैं, सच्ची दिल से सेवा कर रहे हैं, बड़े भाग्यवान हैं। भक्तिमार्ग में मेरे अन्दर एक ही भावना थी कि ईश्वर में ध्यान कैसे स्थिर हो। अनेक शास्त्र पढ़ती थी फिर भी ध्यान नहीं लगता था तो अपने को चमाट (थप्पड़) मारती थी। अपने पिता से पूछती थी, आपको दुकान याद आती है और माँ को नौकर याद आता है तो यह कैसी भक्ति हुई? **आप भी सच्चे दिल से अपने से पूछो, बाबा के सिवाय और कोई याद आता है क्या? सेवा भी याद ना आवे। सेवाधारी के लिए हर कदम पर सेवा है। मन, वचन, कर्म ऐसा श्रेष्ठ बनाओ जो दूसरों को सीखने को मिले। सिखाओ तो कोई नहीं सीखेंगे, देखकर सीखेंगे। किसी को सिखाओ तो पूछता है, आप करते हो क्या? मम्मा-बाबा ने सिखाया नहीं पर हम उन्हें देख-देख सीखे बहुत।**

सादगी इतनी हो, जरूरी नहीं है अपने लिए फालतू खर्च करने की। कभी नहीं फालतू खर्च करेंगी, न किसको करने देंगी। खाओ भले, पर अन्न का एक दाना भी व्यर्थ (झूठा) न जाये। आज तक भी, जितना खा सकती हूँ, उतना लेती हूँ, ज्यादा एक दाना भी नहीं। **बाबा कहता था, बच्ची, यह यज्ञ का अन्न है। भक्ति मार्ग में तो थाली धोकर पीते हैं। खाना खाते समय खुद बाबा को याद नहीं किया, किसी और को याद नहीं कराया, यह भी भूल है।**

कई कहते हैं, आज से याद और सेवा का बैलेन्स रखना शुरू करेंगे। अरे, अभी बैलेंस रखेंगे तो धंधा कब करेंगे। बाबा कहता, पढ़ाई में कमाई है। बाबा ने कराची में दृष्टि दी तो सबने चश्मे उतार दिए। बाबा के सामने कभी चश्मा नहीं पहना। बाबा सामने बिठाता था। आदत नहीं डालनी चाहिए। नहीं सुन सकते, कोई हर्जा नहीं। यह नहीं सोचो, हाय! मैं सुन नहीं सकती। कोई बात आई, आप बाबा के पास बैठ जाओ, बात चली जायेगी। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

क्या कहें इसे, पूनम का उजियारा,
या चलती-बहती पावन धारा।
जो करता अध्ययन,
मिटता पल में अंधियारा।
इसमें छिपा सार,
सागर का सारा।
तन्मयता से पढ़े जो,
पाए रत्नों का पिटारा।
करे धारणा तो मिट जाए,
मन का कल्मष सारा।
ज्ञानामृत बन गई,
जीवन का अनमोल सहारा।

– ब्र.कु. बैजनाथ,
ओ.आर.सी. (दिल्ली)

सभी के दिल को मोहने वाली ज्ञान से भरी पिटारी 'ज्ञानामृत'जब मिलती है तो मन को खुश करती है व ज्ञान अमृत की वर्षा करके सूखे जंगलनुमा मनुष्य जीवन को हरा-भरा कर देती है। हरियाली माता ज्ञानामृत है। 'मतभेद भले हो, मनभेद नहीं' लेख में वर्णित कहानी ने विपरीत विचार वालों को भी प्रेम करना सिखा दिया। धन्यवाद आपका जो मुझे बड़ी सीख मिली, जीवन भर आभारी रहूँगा।

– ब्र.कु.प्रकाश चन्द्र,
उत्तम नगर (दिल्ली)

आत्मा में अमृत भरने वाली, रूहों पर शीतल रस बरसाने वाली एवं अद्भुत परमात्म सान्निध्य देने वाली अनोखी यह ज्ञानामृत पत्रिका है। भ्राता आत्म प्रकाश जी ने 'सम्मान के पात्र हैं वृद्ध' यह अनोखा लेख लिखकर जनमानस में नई दिशा का संचार कर दिया है। वृद्धों में तो नया जोश व उत्साह आ गया है। उन्होंने अपने जीवन के महत्त्व को समझ लिया है। यह समाज वृद्धों को ऊँची नज़र से देखने लगा है। आपने सभी को यह पाठ पढ़ा दिया है कि 'न सा सभा यत्र न संत वृद्धाः' अर्थात् वह सभा, सभा नहीं है जहाँ वृद्ध लोग नहीं। अतः आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

– ब्र.कु.जयकिशोर,
पचखुरा महान, हमीरपुर

सच्चे अर्थों में 'ज्ञानामृत' कभी न समाप्त होने वाली सुधा से संपूर्ण कलश है जो मन व बुद्धि में धधक रही ज्वाला-सी क्षुधा को शीतल करती है। अक्तूबर 08 के अंक में 'करवा चौथ के व्रत का आध्यात्मिक रहस्य' लेख अंधश्रद्धा क्या है और आज के परिवेश में धार्मिक क्रियाओं का वास्तविक अर्थ क्या है, इन दोनों पहलुओं का विवेचन करता है। मन में उठने वाली दुविधाओं को धो डालने में सक्षम है। 'सब भेदों से परे – आदर्श का एक नमूना' आलेख में खून के रंग का दृष्टांत सचमुच विकृत मन को श्रेष्ठ सोच प्रदान कर देने वाला है। वास्तव में ज्ञानामृत पत्रिका मानवीय मूल्यों की पताका फहराने वाली अमूल्य धरोहर है।

– ब्र.कु.सुनीता,
चिटगुप्पा (बीदर)

ज्ञानामृत के अक्तूबर, 08 के अंक में प्रकाशित कविता 'बीड़ी की शादी' पढ़ने में मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद लगी। कविता में सरल, मनोरंजक एवं सार्थक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है जिन्हें पढ़कर नशेड़ियों का नशा थोड़ी देर के लिए ज़रूर हरण हुआ होगा। इस कविता से किसी न किसी नशेड़ी को हँसी-हँसी में चोट ज़रूर लगनी चाहिये जिससे वह नशे की लत से तौबा करे और नशा छोड़ दे तथा कविता लिखने का उद्देश्य सफल हो, हम ऐसी कामना करते हैं। नशेड़ियों के लिए हमारा संदेश है कि 'जवानी में कई व्यसन चिपक जाते हैं, बढ़ती उम्र की दहलीज में एक-एक व्यसन को कुरेदते जाना है'

– चन्द्र मोहन भसीन, जबलपुर

ज्ञानामृत पत्रिका में बहुत ही सुन्दर लेख होते हैं जो मानव जीवन को ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न करते हैं और मानव बदलने भी लग जाता है। दिसंबर 08 के अंक में 'कुएँ से निकल सागर की ओर' क्रांतिकारी लेख था, सच्चाई के बहुत नज़दीक था। वैसे भी लेखिका बहन के लेख दिली आवाज़ होते हैं। शिव बाबा की कृपा से ही काम-क्रोध आदि विकार जाएँगे।

– श्यामलाल गुप्ता, धुरी

इन्द्रियों पर राज्य करना ही वास्तविक राजनीति है

उड़ीसा विधानसभा के उपाध्यक्ष (Deputy Speaker) भ्राता प्रह्लाद डोरा जी सन् 2005, फरवरी से राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। इस अभ्यास से आपके जीवन में गहन सकारात्मक परिवर्तन आया है। इस अभ्यास ने एक ओर जहाँ आपके राजनैतिक क्षेत्र की कार्यविधि को सुगम, सरल और तनाव रहित बनाया है वहीं दूसरी ओर, पारिवारिक उत्तरदायित्वों को भी आप पहले से अधिक कर्त्तव्यपरायणता से निभा रहे हैं। राजयोग की उपलब्धियों का बखान, 'ज्ञानामृत' से साक्षात्कार के दौरान आप स्वयं कर रहे हैं – सम्पादक

प्रश्नः आप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की राजयोग की शिक्षा के संपर्क में कब आए?

उपाध्यक्ष जीः लगभग चार वर्ष पूर्व मैं ईश्वरीय ज्ञान में आया। जब सन् 2005 में पहली बार माउंट आबू आया तो एक विकारग्रस्त व्यक्ति के रूप में आया था परन्तु जब लौटा तो एक संकल्पबद्ध सेवक के रूप में, एक ईश्वरीय विद्यार्थी के रूप में लौटा। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय के सभी परिसरों जैसे कि ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन, शान्तिवन तथा उनमें रहने वाले हज़ारों भाई-बहनों को देखा तो मुझे कबीर का दोहा याद आया। दोहा इस प्रकार है, 'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय; जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय' मुझे कहीं कुछ भी बुरा दिखाई नहीं दिया। हमारा मन ऐसा है कि हर स्थान पर बुराई खोजता है। मैंने भी बुराई खोजने की कोशिश की पर कुछ भी बुरा नहीं मिला। जब अपना दिल खोजा तो पाया कि मुझसे बुरा न कोय। अपना दिल खोजा तो समझा कि मैं स्वयं पाँच विकारों से ग्रसित हूँ। मुझे लगा, मुझसे बुरा कोई नहीं है। तब मेरे मन में विकारों को त्याग देने का दृढ़ विचार उत्पन्न हुआ और मैंने इन्हें त्याग भी दिया। उन्नीस फरवरी को बाबा के दर्शन हुए। दादी जानकी तथा अन्य सभी ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहनों, जो पवित्रता तथा शुद्धता की रक्षा कर रहे हैं, को देखकर मुझे भगवद्गीता का एक श्लोक याद आया। जब अर्जुन ने भगवान का रूप देखा तो वे बोले, 'नमोऽस्तु ते सर्वत एवसर्व' इसका अर्थ है आपके लिए सब ओर से ही नमस्कार हो। मैंने भी यहाँ आकर, जब दादियों की और भाई-बहनों की पवित्रता देखी तो मेरे दिल से भी निकला, आप सबके लिए सब ओर से ही नमस्कार हो। आबू से लौटने के बाद घर में ईश्वरीय क्लास शुरू की और परिवार के सभी सदस्य मुरली सुनने लगे।

प्रश्नः उड़ीसा विधानसभा में उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहते हुए ईश्वरीय ज्ञान से आपको क्या फायदा हुआ?

उपाध्यक्ष जीः पहले मैं यह समझता था कि दूसरों पर राज्य करना, यही राजनीति है लेकिन जब ईश्वरीय ज्ञान में आया तो मैंने जाना कि वास्तविक राज्य का अर्थ है अपनी इंद्रियों पर राज्य करना। इससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन आया। मैंने ब्रह्मचर्य का पालन शुरू किया। अपने पद पर मुझे कई बार शीघ्र निर्णय भी लेने पड़ते हैं। मैं अपनी बुद्धि की तार शिवबाबा से जोड़े रखता हूँ जिससे मुझे एकाग्रता से सही निर्णय लेने में बहुत मदद मिलती है। पहले की भेंट में मेरे विचारों में बहुत अन्तर आ गया है इसलिए अब मेरे निर्णय निष्पक्ष रहते हैं और मैंने यह भी देखा है कि राजनीति में विरोध करने वाले तो होते ही हैं पर फिर भी निर्णयों को स्वीकार किया जाता है और वे लागू होते हैं।

प्रश्नः अभी चुनाव होने वाले हैं। आप पहले भी चुनाव लड़ते थे, अब

भी लड़ेंगे। क्या पहले और अब में कुछ अन्तर महसूस हो रहा है?

उपाध्यक्ष जी: बहुत अन्तर महसूस हो रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि पहले जो लोग मेरा विरोध करते थे, इस बार वे भी मेरे समर्थन में आएंगे। छोटे से लेकर बड़े तक सभी का मुझे समर्थन मिलेगा। एक कदम संकल्प का मेरा और बाबा हज़ार कदमों से मदद कर रहा है, ऐसा महसूस होता है। मैं बाबा को स्मरण करता हूँ और उनसे मार्गदर्शन तुरंत मिलता है।

प्रश्न: आप जो ईश्वरीय महावाक्य प्रतिदिन सुनते हैं, उनसे आपने क्या सार ग्रहण किया?

उपाध्यक्ष जी: ईश्वरीय महावाक्यों का सार है – 'मन्मनाभव'। यह महामंत्र भी है, संजीवनी बूटी भी है, अमृत भी है। मैं सारा दिन इसी अभ्यास में रहता हूँ।

प्रश्न: राजनीति व्यक्ति को बहुत व्यस्त कर देती है। ऐसा व्यस्त व्यक्ति अपने परिवार को समय नहीं दे पाता, क्या आप भी ऐसा महसूस करते हैं?

उपाध्यक्ष जी: ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मैं भी परिवार को समय नहीं देता था लेकिन अब मैं उनके साथ बैठता हूँ, समय देता हूँ और वे मेरे व्यवहार से काफी संतुष्ट रहते हैं।

प्रश्न: राजयोग के अभ्यास का अनुभव सुनाइये।

उपाध्यक्ष जी: मैं अमृतवेले चार बजे उठता हूँ। घर में ही राजयोग का कक्ष अलग से बनाया हुआ है। हाथ-मुँह धोकर वहाँ बैठ जाता हूँ। बुद्धि में प्यारे शिव बाबा की छवि इमर्ज करता हूँ, अपना ध्यान भ्रकुटि में आत्मा पर केन्द्रित करता हूँ और फिर इस प्रकार चिन्तन करता हूँ, **'प्यारे बाबा, आप ही मेरे सब दुर्गुणों को दूर करने वाले हैं; आप ही उद्धार करने वाले हैं; आप ही शांति के सागर, ज्ञान के सागर, दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता हो; आप ही पत्थर बुद्धि वालों को पारस करते हो ... ।' जब मैं इस प्रकार चिन्तन करता हूँ तो मुझे जो आनन्द मिलता है, वह अवर्णनीय है। उस आनन्द का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। राजयोग के अभ्यास से दिव्य गुणों जैसे, शांति, आनन्द, प्रेम, सत्यता, पवित्रता, दिव्यता में निरंतर वृद्धि हो रही है। मेरी निरंतर चाहना बनी रहती है कि मैं ज्यादा से ज्यादा सत् के संग में रहूँ।** जब मैं मलेशिया गया तो कुआलालम्पुर में स्थित ब्रह्माकुमारी आश्रम में गया। जापान गया तो टोक्यो में भी मैंने शाखा को ढूँढ़ लिया और उसका लाभ उठाया। लंदन और पेरिस की शाखाओं का भी मैं अवलोकन कर चुका हूँ। चाहे गाँव हो, शहर हो या विदेश हो, मैं जहाँ भी जाता हूँ, मेरा पहला काम स्थानीय ब्रह्माकुमारी शाखा में जाकर लाभ उठाने का रहता है, इसके बाद मैं दूसरे कार्यों को महत्त्व देता हूँ। राजयोग के अभ्यास द्वारा मुझे बहुत खुशी और बहुत संतुष्टता मिली है।

प्रश्न: आपके साथ बैठी आपकी पुत्री से मैं पूछना चाहूँगी कि

राजयोग के अभ्यास से आपने अपने पिताजी में क्या परिवर्तन देखे?

सुपुत्री चिन्मयी देवी: पिताजी को पहले थोड़ा गुस्सा आता था लेकिन अभी बहुत कम हो गया है। पहले बहुत दवाइयाँ लेते थे तनाव की, दर्द की, पाचन की, श्वसन की; अनेक इंजेक्शन भी लेते थे लेकिन जब से राजयोग का अभ्यास करना शुरू किया है, दवाइयाँ ना के बराबर हो गई हैं। पिताजी की यह विशेषता पहले भी थी और अब भी है कि यदि वे गुस्सा कर भी लेते हैं तो तुरंत मान लेते हैं कि गुस्सा करना बहुत बुरी बात है, शायद इसी स्व-अनुभूति के कारण वे गुस्से को जीतने में इतनी जल्दी सफल हो सके। जब एक बार हलके से बीमार हुए तो हॉस्पिटल में भी बाबा के गीत सुनते रहे, बाबा को याद करते रहे और बहुत जल्दी ठीक हो गए। हमारे घर में जो भी मिलने आता है, पिताजी उसे 'ओमशांति' लिखा हुआ एक पेन अवश्य सौगात में देते हैं। कई बार बाबा की ओमशांति निशान वाली घड़ी, साहित्य और नोटबुक भी सौगात में देते हैं। ❖

शिवरात्रि – आध्यात्मिक पहलू का विवेचन

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

धर्म और अध्यात्म प्रधान देश भारत में प्रतिदिन कोई-न-कोई उत्सव, जीवन धारा में नई उमंगें, नई लहरें उत्पन्न करता ही रहता है। त्योहारों की इस कड़ी में शिवरात्रि या शिवजयंती का त्योहार सर्वप्रमुख है। इस दिन को हम सर्वात्माओं के पिता, जगत के चैतन्य बीज परमात्मा शिव के सृष्टि पर अवतरित होने की यादगार के रूप में मनाते हैं। कहा जाता है –

'सर्व पर्वों में पर्व महान,
शिव जयंती है सर्व महान।'

कुछ उलझे हुए प्रश्न

भक्तिकाल में जब हम मंदिर में जाते थे तो देखते थे कि मंदिर के मुख्य स्थान पर मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है और मंदिर के एक कोने में शिवलिंग भी अवश्य स्थापित रहता है। मन में सवाल उठता था कि मंदिर का मुख्य देवता चाहे श्री राम हो या श्री कृष्ण, श्री शीतला जी हों या श्री दुर्गा जी लेकिन शिवलिंग की उपस्थिति इतनी अनिवार्य क्यों है?

दूसरा प्रश्न यह भी उठता था कि देवी-देवताओं के मंदिर रंग-बिरंगे फूलों से, शीशे के कलात्मक टुकड़ों से, संगमरमर से, सोने अथवा चांदी की पॉलिश से या अन्य सजावटी चीजों से आकर्षक बनाए जाते हैं लेकिन शिवलिंग की स्थापना का स्थान बहुत ही साधारण व सादा होता है। ऐसा क्यों? एक अन्य प्रश्न यह भी उठता था कि घर में यदि कोई साधारण-सा मेहमान आ जाए या हम किसी के यहाँ जाएं या कोई विशेष उत्सव या पारिवारिक स्नेह-मिलन हो तो हम एक-दो का गुलाब, गेंदा या अन्य खुशबूदार फूलों से स्वागत करते हैं, घर की सजावट में भी इन्हीं फूलों को रखते हैं परंतु शिवलिंग पर झाड़-झंखाड़ में उगने वाले रंग-गंध और मूल्यहीन आक-धतूरे के फूल ही चढ़ाये जाते हैं, ऐसा क्यों? यदि मनुष्य का स्वागत आक और धतूरे के फूलों से किया जाये तो शायद वह जीवन-भर के लिए बोलना ही बंद कर दे लेकिन भगवान को यही फूल पसंद क्यों हैं? चौथा प्रश्न यह भी मन में उत्पन्न होता था कि मानव, मानव की ख़ातिरदारी आम, केला, सेब आदि फलों से करता है लेकिन प्रकृति के मालिक भगवान पर साधारण व सस्ते फल बेर चढ़ाए जाते हैं, ऐसा क्यों?

शिव के साथ 'रात्रि' का संबंध

जब हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आए और शिव तथा शिवरात्रि के वास्तविक रहस्य को स्वयं भगवान द्वारा ब्रह्मा मुख से सुना तो उपरोक्त सभी प्रश्नों के हल मिल गए और ईश्वरीय कर्त्तव्य को जानकर जीवन को ऊँचा उठाने में बहुत मदद मिली। सबसे पहले तो हमें यह मालूम पड़ा कि शिव के साथ रात्रि शब्द जोड़ने का क्या औचित्य है। किसी बच्चे का जन्म चाहे काली अंधेरी रात में क्यों न हो, उसके निमित्त हर वर्ष मनाए जाने वाले दिन को जन्मदिन ही कहा जाता है, जन्मरात या जन्मरात्रि नहीं। परंतु भगवान के जन्म या अवतरण के साथ रात शब्द का क्या अर्थ है?

परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं, हे वत्स, शिवरात्रि में यह जो 'रात' शब्द है, यह बारह घंटे वाली हद की रात का परिचायक नहीं है। यदि मेरा आगमन केवल एक ही रात में होता हो तो कितने ही मनुष्य यह शिकायत करेंगे कि 'प्रभु! उस रात को तो मैं बीमार था या मेरे घर में मेहमान आए थे या मेरे घर में किसी की मृत्यु हो गई थी या मुझे किसी ज़रूरी कार्यवश घर से बाहर रहना पड़ गया था .....तो आप उसी रात में क्यों आए? प्रभु, आप तो हमारी मजबूरियों को जानते थे तो कम-से-कम ऐसी रात में तो आते जब हम थोड़े खाली होते और आपकी आराधना या पूजा कर सकते।' लेकिन हम जानते हैं कि संसार में कोई भी एक रात ऐसी नहीं हो सकती जिसमें संसार के सब लोग खाली हों। कभी न कभी किसी न किसी को कार्य लगा ही रहता है। इसलिए ईश्वरीय कर्त्तव्य हद की एक रात में संपन्न हो ही नहीं सकता। सब हदों से पार परमात्मा हद की एक रात्रि में कैसे बँध सकता है? अत: 'रात्रि' सृष्टि-चक्र के द्वितीय भाग का परिचायक है। प्रथम आधे भाग को ब्रह्मा का दिन कहते हैं जिसमें सतयुग और त्रेतायुग शामिल हैं और

दूसरे आधे भाग को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं जिसमें द्वापर और कलियुग शामिल हैं।

हम यह भी जानते हैं कि जब कोई भी घटना वास्तविक रूप में घटती है तो वह लंबा समय लेती है, जैसे, शादी की तैयारी से लेकर शादी के बाद के रस्म-रिवाज निभाते महीना भर लग जाता है लेकिन वर्षगांठ का उत्सव तो एक-दो घंटे में ही पूरा हो जाता है। इसी तरह बच्चे का जन्म, नामकरण संस्कार और अन्य रस्म अदायगी में लगभग सवा महीना लग जाता है लेकिन जन्मदिन का उत्सव घंटे, दो घंटे में पूरा हो जाता है। भारत की आज़ादी की लड़ाई में भी लगभग सौ साल का अति सक्रिय आंदोलन चला। लेकिन उसके यादगार उत्सव को घंटे, दो घंटे या बारह घंटे तक मनाकर पूरा कर लेते हैं। इसी प्रकार परमात्मा शिव द्वारा सृष्टि को पावन करने का कर्त्तव्य वास्तव में केवल रात-भर नहीं, वर्ष भर नहीं लेकिन लगातार कई वर्षों तक चलता है। ईश्वरीय कर्त्तव्य का यह संपूर्ण काल ही सच्ची शिवरात्रि है। लेकिन भक्तों द्वारा, कई वर्ष चलने वाले ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार के रूप में केवल एक रात्रि के जागरण और उपवास आदि द्वारा शिवरात्रि मना ली जाती है।

कलियुग को रात की संज्ञा क्यों?

आमतौर पर यह माना जाता है कि रात के अंधेरे का फायदा उठाकर लोग समाज विरोधी काम करते हैं जैसे, चोरी, हत्या, लूट आदि लेकिन कलियुग में तो ये सभी कुकर्म दिन-दहाड़े होते देखे जा सकते हैं। बीच-चौराहे पर सैकड़ों-हज़ारों की उपस्थिति में चोरी, हत्या, लूट, चोरबाजारी, अपहरण, उठाईगिरी, डराना-धमकाना, शोषण, मार-पीट आदि होते रहते हैं और लोग काठ के उल्लू बने देखते रहते हैं। जैसे, सोए हुए आदमी के क्रिया-कलाप जाम हो जाते हैं, वह किसी को सहयोग नहीं दे पाता, ऐसे मानो सारा समाज सोया हुआ है, निर्जीव-सा है जो कुकर्मों का ज़रा भी विरोध नहीं कर पाता। पुलिस की नाक नीचे अपराध हो जाते हैं। सेना के होते आक्रमण और घुस-पैठ हो जाती है। रक्षा-तंत्र का जाल बिछा होने पर भी किसी की भी सुरक्षा कभी भी खतरे में पड़ जाती है। तो ऐसे तमोगुणी समय को दिन होते हुए भी रात का नाम दे दिया गया है और यह उचित भी है।

भगवान का कर्त्तव्य कलियुग में ही क्यों?

कहा जाता है, परिस्थिति पुरुष को जन्म देती है। कलियुग की परिस्थितियाँ ही भगवान के आगमन का कारण बनती हैं। भगवान को हम बिगड़ी बनाने वाला, दु:खभंजन, हरि, पापकटेश्वर, अवढरदानी, मुक्तेश्वर, खिवैया, रहमदिल, कृपालु आदि नामों से जानते हैं। उनके ये नाम हैं तो ज़रूर उन्होंने ऐसा कर्त्तव्य भी किया होगा। जैसे, वकील वहाँ जाता जहाँ झगड़ा हो, डॉक्टर को मान्यता वहाँ मिलती जहाँ बीमारी हो, फायर ब्रिगेड का इंतज़ार भी वहाँ होता, जहाँ आग लग गई हो। इसी प्रकार बिगड़ी बनाने वाले की राह भी तब देखी जाती जब सबकी किस्मत बिगड़ गई हो। दु:ख की अति में ही दु:खभंजन को याद किया जाता है, तो सवाल उठता है कि दु:ख सबसे ज्यादा कब होता है? क्या सतयुग में? नहीं। त्रेता में? नहीं। द्वापर में? नहीं। कलियुग में? हाँ। तो भगवान पाप काटने का, नैया पार लगाने का, दु:ख मिटाने का, ज्ञान-दान से झोली भरने का ..... ये सभी कर्त्तव्य कलियुग के अंत में ही करते हैं। जैसे सूर्य की पहली किरण फूटते ही समय बदल जाता है अर्थात् दिन हो जाता है या दिन उदय हो जाता है, उसी प्रकार भगवान का अवतरण होते ही कलियुग में ही संगमयुग नाम वाले नए युग का प्रारंभ हो जाता है जिसे ज्ञान द्वारा जाग्रत होने वाले ही जान और अनुभव कर पाते हैं।

परमात्मा शिव की शिक्षाएँ

संगमयुग में भगवान शिव काम, क्रोध आदि सभी विकारों की बलि अपने ऊपर चढ़वाते हैं। सोई हुई आत्मा का ज्ञान द्वारा जागरण कराते हैं। मनमनाभव का महामंत्र अर्थात् निरंतर स्मृतिस्वरूप होने की श्रीमत देते हैं और गलत वृत्तियों का मन से उपवास कराते हैं। ईश्वर पिता के इन आदेशों का ज्यों का त्यों पालन करने वाले कलियुगी कखपन को छोड़कर सतयुगी दैवी बादशाही को प्राप्त कर लेते हैं। तन, मन, धन और जन का

100% सुख पा लेते हैं और 21 जन्मों के लिए उनके भंडारे भरपूर हो जाते हैं। आज्ञाकारी बच्चों के भंडारे भरपूर करके, नई दुनिया अर्थात् सतयुग की बागडोर उनके हाथों में सौंपकर परमात्मा शिव स्वयं परमधाम लौट जाते हैं और सृष्टि पर दो युगों तक 100% सुख, शांति और पवित्रता का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। परमात्मा शिव के इसी कर्त्तव्य की यादगार के रूप में देवी-देवताओं के मंदिरों को भी बहुत सुंदर तरीके से सजाया जाता है परंतु शिवलिंग साधारण रूप में ही होता है। देवताओं पर बढ़िया खुशबूदार फूल चढ़ाए जाते लेकिन परमात्मा शिव पर विकारों के प्रतीक आक और धतूरे चढ़ाए जाते क्योंकि देवताओं को बनाने वाला परमात्मा शिव ही है।

अर्थ का अनर्थ

कालांतर में द्वापर युग के आरंभ में जब भक्ति मार्ग शुरू हुआ तो संगमयुग पर परमात्मा द्वारा किए गए कर्त्तव्य की यादगार रूप शिवरात्रि मनाई जाने लगी परंतु परमात्मा शिव ने जो शिक्षा दी थी उसके अर्थों का रूपांतरण हो गया। जैसे, एक कहानी सुनाते हैं कि एक मरणासन्न पिता ने अपने पुत्र को बुलाया और कहा कि जीवन में सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए हमेशा याद रखना कि दुकान पर अंधेरे में ही जाना और अंधेरे में ही वापिस लौट आना। आज्ञाकारी पुत्र ने पिता की बात की गाँठ बाँध ली। पिता ने शरीर छोड़ दिया, इसके बाद पुत्र प्रतिदिन मुँह अंधेरे उठता, दुकान पर जाता और दुकान को फिर से बंद करके मुँह अंधेरे ही लौट आता। कुछ ही दिनों में पुत्र का दिवाला निकल गया। उसके मन में प्रश्न उठा कि पिता की आज्ञा मानते हुए भी मैं कंगाल क्यों हो गया। गाँव के किसी समझदार बुजुर्ग से जब उसने इस प्रश्न का समाधान मांगा तो उसने समझाया, बेटे, अंधेरे में जाने का मतलब है, सूर्य निकलने से पहले दुकान पर पहुँचना और अंधेरे में लौटने का मतलब है, सूर्य छिपने के बाद दुकान से लौटना। ऐसा करके देख, तेरी बदहाली खुशहाली में बदल जाएगी। पुत्र ने ऐसा ही किया और कुछ ही दिनों में वह मालामाल हो गया।

बनावटी चढ़ावा

शिवरात्रि के संबंध में यही कहानी मनुष्यात्माओं पर भी लागू होती है। हमने भी शिवरात्रि के अर्थों का रूपांतरण कर दिया। सभी विकार मनुष्य के तन, मन, संबंध और संसार को कड़वेपन से भर देते हैं। ये विकार ज़हर समान हैं। भगवान ने इस जहर को अपने ऊपर अर्पित करवाया था लेकिन भोले भक्तों ने भीतर के ज़हर को तो अर्पित किया नहीं और प्रकृति के एक जहर जैसे कड़वे पौधे आक को शिवलिंग पर अर्पित करने लगे। इसी प्रकार भगवान ने कहा था कि जाति, कुल, धर्म, भाषा, पद, प्रतिष्ठा, रूप, धन, जवानी, विद्या आदि के सभी नशे अथवा अहंकार मेरे पर चढ़ा देना, यहाँ भी हम मनुष्य मात खा गये। भीतर के नशों को अर्पित करने की बजाय हमने प्रकृति की नशीली चीज़ें जैसे, भांग, धतूरे आदि को अर्पित करना शुरू कर दिया। जब हमारा चढ़ावा ही बनावटी है तो हमारी प्राप्तियाँ भी असत्य हो गई अर्थात् भंडारे भरपूर होने की बजाय खाली हो गए। जैसे, एक बार एक बूढ़ी सास ने अपनी बहू को कहा, बेटा, मेरे पाँव में बहुत दर्द होता है, कभी-कभी दबा दिया कर। बहू ने एक दिन पाँव को हाथ में लिया और एक फोटोग्राफर से फोटो खींचवा लिया। उसके बाद उस फोटो को सास के शयनकक्ष में लगा दिया और कहा कि जब-जब आपके पाँव में दर्द हो, आप समझ लेना कि मैं पाँव दबा रही हूँ। कुछ इसी प्रकार की भूल हमसे भी भगवान की भक्ति के संबंध में हो गई। चढ़ावा तो बनावटी हो ही गया, साथ-साथ हमारी स्मृति भी बनावटी हो गई। भगवान ने कहा था, निरंतर अपना मन मुझमें लगाकर रखना, इससे मन शांत, स्थिर और शक्तिशाली हो जाएगा, हमने इस श्रीमत का भी रूपांतरण कर दिया। शिवपिंडी पर जल से भरा घड़ा लटका दिया, बूंद-बूंद जल शिवलिंग पर चढ़ता रहा और हम खुश हो गए कि मन भगवान पर अर्पित हो रहा है लेकिन वास्तव में मन तो सांसारिक झमेलों में उलझकर अशांत व अस्थिर ही रहा। इस प्रक्रिया से मन शक्तिशाली नहीं बन सका।

व्रत

भगवान का एक नाम निर्वैर है। वो

निर्भय और निर्वैर है और उसने हम मनुष्यों को भी यही सिखाया कि कभी किसी मनुष्य से वैर नहीं रखना अर्थात् दिल के वैर-भाव को मुझ पर अर्पण कर देना तो तेरा जीवन खुशियों से भर जाएगा। हमने इस फरमान को भी नासमझी के कारण उलट दिया और वैर के स्थान पर बेर चढ़ाना प्रारंभ कर दिया। क्या नकली चीज़ें फायदा दे सकती हैं? क्या नकली दवाई से बीमारी ठीक हो सकती है? आजकल बाज़ार में बनावटी फल आते हैं और छोटी-छोटी प्लास्टिक की प्लेटें आती हैं जिनके ऊपर फलों के चित्र बने होते हैं। अगर किसी मेहमान के सम्मुख हम बनावटी फल या फलों के चित्र वाली प्लेट रख दें तो क्या वह प्रसन्न हो जाएगा, क्या वह हमें दुआ देगा? तो फिर अर्थ बदली हुई चीज़ें भगवान पर चढ़ाने से भगवान कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? इसी प्रकार परमात्मा पिता ने मन की अनेक प्रकार की चंचल व विकृत वृत्तियों को नियंत्रित करने की श्रीमत दी थी। वृत्तियों के नियंत्रण का व्रत लेने की बात कही थी लेकिन हमने भोजन न खाने का व्रत ले लिया। द्वापर के प्रारंभ में इस व्रत में भी सात्विकता थी। भोजन न खाने के दो फायदे थे। एक तो, भूख लगने पर पेट को भोजन न मिलने से हठ के कारण ही सही भगवान की तरफ मन जाता था और दूसरा, अन्न से जो भारीपन या स्थूलता आ जाती है उसकी बजाय व्यक्ति हल्का रह सकता था। आज के युग में ये दोनों बातें पीछे रह गई हैं। अधिकतर साधक भूख के कारण ईश्वर के योगी नहीं लेकिन पेट के योगी बन जाते हैं। बार-बार ध्यान पेट की तरफ जाता कि आज भोजन नहीं किया और दूसरा, हल्का रहने की बजाय वे पेट को अन्न के अलावा अन्य कई तरह की चीज़ों से भर लेते हैं और उनके स्वाद का आनंद भी लेते हैं जिस कारण व्रत का असली उद्देश्य लगभग विस्मृत ही हो जाता है। ऐसे व्रत के आधार पर ना तो हम अपने विकारों को और ना ही अन्य विकृतियों को जीत पाते हैं। व्रत का अर्थ है विकारी वृत्ति का नियंत्रण या विकारी वृत्तियों को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प। जब हम काम-क्रोध-लोभ की वृत्तियों को तथा ईर्ष्या, द्वेष जैसी दुर्भावनाओं को जीत लेते हैं तभी भगवान हम पर प्रसन्न होकर, हमारे भण्डारे भरपूर करते हैं।

जागरण

जब किसी व्यक्ति को किसी चीज का ज्ञान हो जाता है, तब ही कहा जाता है कि अब तक तो वह सोया हुआ था, अब जाग गया। नहीं तो बिना ज्ञान के केवल खुली आँखें रख लेने से जो रात्रि जागरण होता है, उससे क्या लाभ? रात को तो चोर, उचक्के और डाकू भी जागते हैं। बीमार, भूखे, चिंताग्रस्त लोग भी रात्रि जागरण करते हैं। मेहमानों के इंतज़ार में आवश्यक काम-धंधे निपटाने के लिए या शादी-ब्याह, जन्म आदि परिस्थितियों में भी रात्रि जागरण करना पड़ता है। सच्चा जागरण आँखें खोलने से नहीं बल्कि मन खोलने से होता है। जैसे राजा भतृहरि को जब संबंधों की असारता का ज्ञान हुआ तो उसने कहा, अब तक तो मैं सोया हुआ था, अब मेरी नींद खुली है। ऐसे जागरण के लिए आधार बनता है, ईश्वर का प्रेम और वैराग्य। ईश्वरीय प्रेम और वैराग्य के अभाव में यदि हम जागरण करते हैं तो उसमें कई बार स्थूल चीज़ों का सहारा लेना पड़ता है जैसे, चाय, शराब और अन्य नशे की चीज़ें। जागरण तो हो जाता है लेकिन मन सोया ही रहता है और फल प्राप्त नहीं होता। मन से जागे हुए व्यक्ति का चिंतन इस प्रकार हो जाता है – **मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ, मुझ आत्मा का पिता परमपिता परमात्मा शिव है, मैं इस सृष्टि रंगमंच पर मेहमान हूँ। शरीर रूपी वस्त्र धारण कर पार्ट बजाने आई हूँ, मेरा असली घर परमधाम है, विश्व की सर्व आत्माएँ परमात्मा की संतान होने के नाते मेरे भाई-भाई हैं। मन के इस प्रकार जाग जाने से व्यक्ति विकर्मों से मुक्त हो जाता है, मुक्ति-जीवन्मुक्ति का अधिकारी बन जाता है, यही सच्चा जागरण है।** द्वापर और कलियुग के 2500 वर्षों से भक्त लोग शिवरात्रि पर अज्ञानतावश नकली जागरण करते आ रहे हैं इसलिए शिवरात्रि मनाते हुए भी उनके सुख-शांति और धन के मटके खाली होते जा रहे हैं।

भक्तों की नादानी

एक बार एक आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद प्रसाद बंटने लगा तो

(शेष ... पृष्ठ 20 पर)

लघु नाटिका

शिव अवतरण

● ब्रह्माकुमार चंद्रवदन चोकसी, विद्यानगर (गुजरात)

पात्र : समय, खूनी और चीत्कार करने वाला, स्त्री, अपहरणकर्त्ता और बच्चा, धरती, ज्वालामुखी, विज्ञान, आकाश, हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन, ईश्वरीय वाणी, ब्रह्मा

समय – मैं समय हूँ। सारा विश्व मेरे इशारे पर चलता है। सूर्योदय–सूर्यास्त मेरे कहने पर होता है। ऋतुओं का परिवर्तन मेरे अनुसार ही चलता है। चारों युगों का चक्र, जन्म-बचपन-जवानी-बुढ़ापा-मृत्यु भी मेरे ही अधीन हैं। लोग सच ही कहते हैं – समय बड़ा बलवान है, समय किसी के रोके कभी रुकता नहीं। बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सम्राटों और संत-महंतों को मेरे वश में होकर इस धरती को छोड़ना पड़ता है। राजा को रंक और रंक को राजा बनाने वाला भी मैं ही हूँ। पहचानो मुझे, समझो मेरा मूल्य, ओ दुनियावालो.. देखो, देखो अब कौन-सा समय चल रहा है? घोर कलियुग-अज्ञान अंधकार का युग देखो, अपनी नज़र के सामने।

दृश्य 1 : *(छूरा लेकर किसी आदमी के पीछे दौड़ता हुआ खूनी)* चीत्कार .. बचाओ.. बचाओ।

दृश्य 2 : *(निर्दोष स्त्री से बलात्कार)*

स्त्री – दुष्ट, छोड़ो मुझे .. अरे, कोई तो बचाओ, बचाओ। हे भगवान! तू तो मेरी रक्षा कर। यह राक्षस मेरी इज़्ज़त लूट रहा है .. *(रोती है)*

दृश्य 3 : *(किसी बच्चे का अपहरण)*

अपहरणकर्त्ता – *(फोन पर)* सुन, तेरा बच्चा मेरे पास है। ले, कर अपने बेटे से बात।

बच्चा – *(फोन पर)* पापा, यह मुझे मार डालेगा, पापा, मुझे बचा लो, मम्मी, मुझे छुड़ाओ, इसे रुपये दे दो।

अपहरणकर्त्ता – अगर बच्चा चाहिये जिंदा, तो पाँच लाख लेकर आ जा अजरबान इमारत के पीछे, शाम 7 बजे। अगर पुलिस को खबर दी, कोई धोखा किया तो समझ लेना, तेरा लाड़ला मार दिया जायेगा, समझा .. हा हा हा ..

(बच्चे की आवाज़) – पापा, मम्मी .. मुझे बचा लो .. ये मुझे मार डालेंगे .. इसे रुपये दे दो .. मुझे छुड़ाओ .. *(रोने की आवाज़)*

दृश्य 4 : प्राकृतिक आपदाएँ

धरती – हे मानव पुत्रो! मैंने तुम्हें खाने को अन्न दिया और पीने को पानी। तुम्हारे सुख के लिए मैंने पहाड़ों से झरने बहाये, नदियाँ बहाईं, खेतों में फसलें पैदा कीं, माँ की तरह तुम्हारी पालना की। तुम्हारी खुशी के लिये मीठे फल और खुशबूदार फूल पैदा किये। लेकिन, हे कलियुगी मानव! तुमने क्या किया? तुमने वृक्षों को काटा, जंगलों को वीरान बनाया, नदियों को गंदा बना दिया। मुझे ज़हरीली खाद देकर प्रदूषित किया, खानियाँ खोदकर मेरे खज़ानों को लूटा, मेरा सत्व चूस लिया, ज़मीन के नीचे रेल की पटरियाँ बिछाई, नगर बसाये, गाँव मिटाये। मुझे खोखला कर दिया। इसलिए मैं बार-बार कराहती हूँ, काँपती हूँ, तभी तो भूकंप होता है।

ज्वालामुखी – जब धरती काँपती है तो मैं आग उगलता हूँ। हाहाकार मचाता हूँ। आपकी इमारतें पत्तों के महल की तरह टूट पड़ती हैं, इसमें मेरा क्या कसूर?

विज्ञान – हे मानव! तुमने अपने सुख-सुविधा, स्वार्थ और भोग-विलास के लिये मेरा दुरुपयोग किया। धरती के पेट से तेल निकाला। सोना, चाँदी, कोयले निकाले; कारखाने बनाए; कार्बनडाइऑक्साइड, कार्बन मोनाऑक्साइड जैसी ज़हरीली गैसों से आकाश को प्रदूषित किया। हे हिंसकबुद्धि, अहंकारी मानव! तूने आसमाँ को छूने वाले बड़े-बड़े टावर बनाये और किस्म-किस्म के भयानक

बम बनाये। मुझ सुखकारी को विनाशकारी बनाकर महाविनाश को तूने ही निमंत्रण दिया।

आकाश – मैं हूँ आकाश, मेरी छत्रछाया में हज़ारों वर्षों से सुख-चैन की नींद सोने वाले हे मानव! तूने ज़हरीली गैस छोड़कर सारा वायुमंडल खराब कर दिया। सर्व प्राणियों की रक्षा के लिये मैंने ओज़ोन गैस का कवच रचा था, अब वो भी फट चुका है। तुम्हारे कारखानों से निकलने वाली ज़हरीली गैसों के कारण सूरज की किरणें अब इतनी तेज होंगी कि जैसे आग बरसेगी। बर्फ के पहाड़ पिघलेंगे और सागर धरती को डुबो देगा। इस आग के कारण तुम सब तोबा-तोबा पुकारेंगे। जहाँ ज़मीन है वहाँ पानी ही पानी हो जायेगा।

दृश्य 5 : *(लोगों की आवाज़ें)*

हिन्दू – हे प्रभु! इस नर्क की दुनिया से हमें उस पार ले चलो। यह दुनिया जीने लायक नहीं है।

मुसलमान – हे पाक परवरदिगार, रहनुमा, खुदा-ताला, इस जहन्नुम की दुनिया को मिटाकर जन्नत की दुनिया में ले चलो।

क्रिश्चियन – ओ गॉड, सुप्रीम फादर, यह दुनिया हेल बन गई है, मर्सी करो, दया करो, करुणा बरसाओ, हमें हेविन की दुनिया में ले चलो।

समय – हे मानव पुत्रो! तुम्हारी दुख की पुकार सुनकर सभी आत्माओं का परमपिता शिव परमात्मा, जो सर्व के कल्याणकारी, नूतन सृष्टि का सृजनहार, ज्ञान और सुख-शांति का सागर है, इस पुरानी, पतित, तमोप्रधान, नरक समान दुखी सृष्टि का अंत कर के सतोप्रधान देवी-देवताओं की सतयुगी सृष्टि का निर्माण करने के लिए गुप्त रूप से अवतरित हो चुका है। अब नज़दीक भविष्य में ही महापरिवर्तन होगा। लहू की नदियाँ बहेंगी, प्रकृति भयानक रूप धारण करेगी, सूरज आग के गोले बरसायेगा, भूकंप होगा, धरती फटेगी, भारी एटम बम के गोले सर्वत्र विनाश मचा देंगे। विश्व के कई देशों को सागर डुबो देगा। एकमात्र भारत भूमि अमरभूमि, देवभूमि बनेगी।

दृश्य 6 : *(लोगों की सम्मिलित आवाज़ें)*

अहो प्रभु! आप आ गए, हमें पता चलने में बहुत देर हो गई।

ईश्वरीय वाणी *(ध्यानस्थ ब्रह्मा के मुखकमल से)* **–**

निजानन्द स्वरूपं
शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
ज्ञान स्वरूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
प्रकाश स्वरूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम्

'हे मेरे मीठे बच्चो! मैं सृष्टि चक्र के अंतिम समय आया हूँ, इस भारत को स्वर्ग बनाने। पतित कलियुगी आत्माओं को ज्ञान अंजन देकर सतयुगी देवी देवता बनाने। अब स्वयं को पहचानो। समय को भी पहचानो। स्वर्णिम-सतयुग का सूरज भारत में उदय होने वाला है। श्री कृष्ण और श्री राधा के बचपन की सुहावनी दैवी दुनिया आ रही है। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का सुख, शांति, पवित्रता और समृद्धि संपन्न सतयुगी स्वराज्य आ रहा है। सतयुगी दुनिया में अपना उज्ज्वल भविष्य प्राप्त करने के लिये मुझ अपने पिता के बताये हुए ज्ञान मार्ग पर चलो। राजयोग द्वारा आत्मा को पावन बनाकर दिव्यगुणों से भरपूर कर दो। यह अमूल्य समय हाथ से जाने न पाये। अब नहीं तो कब नहीं, समझा!

समय-चक्र

ब्रह्माकुमारी अंकिता, गोरखपुर

समय का चक्र घूमता रहता,
रहम नहीं वह किसी पर करता।
सुबह का सूरज, शाम ढलेगा,
आज खिला फूल, कल गिरेगा।
समय का है यह राज़ अनोखा,
नहीं समझा तो खाया धोखा।
समय की बहती धारा है,
समय ने किसे निहारा है।
समय पर चूका जो इन्सान,
हमेशा ही वह हारा है।
समय से होगी हाहाकार,
समय से होगी जयजयकार।
जब होंगे तुम पूर्ण तैयार,
तब बदलेगा यह संसार।

दूसरों को सम्मान देने से स्वयं को सम्मान मिलता है। क्रोध से किसी को बदला नहीं जा सकता, केवल नाराज़गी और अपमान ही मोल लिया जा सकता है। क्रोध एक आसुरी लक्षण है, प्रेम एक ईश्वरीय गुण है।

धूल में छिपा हीरा

• ब्रह्माकुमार भगवान, शांतिवन

दिसंबर,08 अंक में आपने पढ़ा कि लेखक शिक्षा के लिए मूलभूत सुविधाओं से वंचित होते हुए भी अपनी लगन और मेहनत से पढ़ाई में आगे बढ़ता रहा। इसके लिए उसे कइयों की ईर्ष्या का शिकार भी होना पड़ा पर अपनी सहनशीलता से उसने हर परिस्थिति को सुलझा लिया। नैतिक मूल्यों के निरंतर ह्रास के कारण समाज में, परिवारों में घटित होने वाली अनेक अमानवीय और हिंसक घटनाओं को अपनी आँखों के सामने घटते देखकर उन्हें संसार से गहरा वैराग्य भी उत्पन्न हुआ। पढ़िए, आगे क्या हुआ ... – सम्पादक

उपराम मनोस्थिति में उगा ज्ञान का अंकुर

मेरे मन की उपराम भूमि पर उन्हीं दिनों भगवान ने ज्ञान का बीज बो दिया। दसवीं कक्षा की तैयारी के लिए जब मैं रद्दी वाले से पुरानी डायरी लेने गया तो उसके साथ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रकाशित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के भी कुछ पन्ने थे, तीन लोक का चित्र भी था। इस चित्र को देखकर मुझे लगा कि मेरे अध्यापक तो मुझे सूर्य, चंद्र और तारागण तक का ही ज्ञान देते हैं लेकिन इसमें तो इनसे पार का भी ज्ञान है तो ज़रूर इतना ऊँचा, महान और श्रेष्ठ ज्ञान देने वाला भी कोई ऊँचा ही होगा। मैंने उन पन्नों को बार-बार पढ़ा। अंदर से आवाज़ आई कि ये बातें सत्य हैं, इन्हें और जानना चाहिए। उन्हीं पन्नों में नागपुर सेवाकेंद्र का पता भी था। मैंने उस पते पर दस पैसे का पोस्टकार्ड अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए लिख भेजा। मुझे उत्तर मिला कि आप दस रुपये भेजो तो हम आपको और कई किताबें भेजेंगे। लेकिन मेरे पास दस रुपये तो थे ही नहीं। तो मैंने बाज़ार में जाकर मजदूरी करके दो-दो पैसे जमा करने शुरू किए। लोगों के घरों में पानी के मटके लाकर देने की सेवा की, उससे भी कुछ पैसे इकट्ठे हुए। इस प्रकार दस रुपये भेजने पर मुझे हर महीने साप्ताहिक पाठ्यक्रम के एक-एक पाठ की प्रति आने लगी। मैं एक-एक पाठ को कई-कई बार पढ़ता था और एकांत में बैठकर उसमें बताई गई विधि का गहन अभ्यास करता था। मुझे बहुत शांति मिली और सभी बातें उद्देश्यपरक लगीं। दसवीं की परीक्षा के बाद मैंने आई.टी.आई. में दाखिला ले लिया।

कम खर्च में आजीविका

एक दिन मेरे प्रिंसिपल ने मुझे ये किताबें पढ़ते देख लिया। उसने कहा, ये सब फालतू की किताबें हैं, इन्हें छोड़ दो, तुम बहुत लायक हो, मैं तुम्हें नौकरी लगवाऊँगा। लेकिन मुझे तो ज्ञान इतना रुचिकर लगने लगा था कि मैंने कहा कि साहब, नौकरी तो क्या, मुझे कोई प्रिंसिपल भी बनाए तो भी मुझे यह ज्ञान नहीं छोड़ना। मेरी लगन देख वे चुप हो गए। आई.टी.आई. में भी मैं प्रथम स्थान पर रहा। कुछ दिनों बाद वहाँ प्रदर्शनी लगी और ब्रह्माकुमारी विद्यालय की गीता पाठशाला खुल गई। मैं वहाँ जाने लगा और धीरे-धीरे पाठशाला चलाने की पूरी ज़िम्मेवारी भी संभाल ली। लेकिन ज्ञान की गहराई समझने का उत्साह और लगन मेरे भीतर दिनों-दिन बढ़ती गई। इसी उद्देश्य को लेकर मैं सांगली चला गया जहाँ सेवाकेंद्र था। अब मैं रहूँ कहाँ, यह प्रश्न था। मैंने एक विधि निकाली। हॉस्पिटल में नौकरी ढूँढ़ने गया तो डॉक्टर ने मुझे कहा, 500 रुपये महीने पर आपको रख लेंगे। मैंने कहा, मुझे 500 रुपये नहीं चाहिएँ, मेरा तो 100 रुपये से भी काम चल जाएगा क्योंकि अंदर से मैं यह जानता था कि 500 रुपये देंगे तो सुबह से शाम तक मेरे से काम भी लेंगे फिर ज्ञान-योग के लिए समय नहीं बचेगा। मेरा असली उद्देश्य जो ज्ञान-योग सीखने का है, वह पूरा नहीं होगा। जब मैंने 100 रुपये की बात कही तो डॉक्टर ने कहा – तुम कभी भी जाओ और कभी भी आओ। मुझे मुँहमांगी मुराद मिल गई। वहाँ मैं दो वर्ष रहा। पचास रुपये कमरे का किराया और पचास रुपये में खाने-पीने का खर्चा पूरा हो जाता था। चावल उबाल कर उनमें चीनी डालकर खा लेता था। कम खर्च में आजीविका

चलती थी। इस दौरान मैंने ज्ञान की गहराई समझी, एकाग्रता का खूब अभ्यास किया। फिर मैंने सोचा कि यदि सेवाकेंद्र पर मैं इतना सीख सकता हूँ तो यदि मुझे माउंट आबू जाने का मौका मिले तो मैं कितना न सीख जाऊँगा। इसलिए मुझे मधुबन आने की लगन लग गई। इस प्रकार सन् 1985 में मैं पहली बार मधुबन आया, बाबा से मिला और 2 मास सेवा के लिए यहीं रुक गया।

बेहद की भावना का जागरण

मुझे अपने इस कर्त्तव्य का निरंतर अहसास था कि गरीब परिवारजनों के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कुछ कमाऊँ, उनकी मदद करूँ परंतु ईश्वरीय ज्ञान ने मुझे हद के कल्याण के साथ-साथ बेहद के कल्याण की नई सोच प्रदान की जिसके अनुसार मैंने यह भी सोचा, **केवल मेरा घर ही गरीब थोड़े ही है, सारे संसार में ऐसे गरीब घर पता नहीं कितने हैं। उन सबका जीवन-स्तर ऊँचा कौन उठाएगा? इसलिए मुझे अपना जीवन एक परिवार के लिए नहीं बल्कि विश्व के सभी परिवारों के लिए समर्पित करना है।** मेरी इस बेहद की विचारधारा का बड़ा सुंदर परिणाम सामने आया। हुआ यह कि अनपढ़ होते हुए भी मेरे छोटे भाई की एक जगह नौकरी लग गई और परिवार की गाड़ी ठीक तरह से चलने लगी।

तांत्रिक को ज्ञान समझाया

परिवार के लोगों को अभी तक यह पता नहीं था कि मैं ईश्वरीय ज्ञान में चलता हूँ। वे तो यही समझते थे कि कहीं नौकरी आदि की खोज में गया हुआ है। दो वर्ष बाद जब मैं घर गया और पिताजी ने रोज मुझे योग में बैठते देखा तो उन्हें शक हो गया कि कहीं लड़के में किसी बुरी आत्मा (Evil Soul) का प्रवेश तो नहीं है। अंधविश्वासी और अनपढ़ तो वे थे ही। वे मुझे एक तांत्रिक के पास ले गये। तांत्रिक ने कुछ मंत्र पढ़े पर मैं योग की अचल-अडोल अवस्था में बैठा रहा। जब उसकी क्रिया पूरी हो गई तो मैंने उससे पूछा, क्या आपका काम पूरा हो गया? उसने कहा – हाँ। मेरे हाथ में ज्ञान के चित्रों का प्रदर्शनी अंक था। मैंने उससे कहा – मेरे अंदर तो भूत था ही नहीं पर अब मैं आपका भूत निकालता हूँ – ऐसा कहकर मैंने उसे बहुत प्रेम से, विस्तार से ज्ञान की एक-एक बात समझाई। ज्ञान सुनने के बाद उसने पिताजी से कहा – **भूत इसमें नहीं है, पाँच भूत हममें घुसे हुए हैं। मेरे भूत निकालने के लिए आप इसे लेकर आए हो। पिताजी निशंक हो गए, फिर हम घर वापस आ गए।**

भगवान का नाता सर्वोच्च है

जब मेरी शादी की बात चली तो मैंने स्पष्ट कह दिया कि मैं शादी नही करूँगा। शादी की बात मनवाने के लिए पिताजी हमारे पारिवारिक गुरु को घर में ले आए। गाँव के मुख्य-मुख्य लोगों की भी एक सभा बुलवाई गई। सबके बीच में पिताजी ने कहा – देखो, मेरा लड़का मेरा कहना नहीं मानता है। मैंने पूरी सभा को प्रदर्शनी अंक के सारे चित्र अच्छी तरह से समझाए और फिर कहा – देखो, मेरे दो पिता हैं। शरीर का पिता कहता है, शादी करो और आत्मा का पिता कहता है, निरंतर मेरी याद में और विश्व के कल्याण में जीवन की थोड़ी-सी बची हुई घड़ियों को सफल करो। अगर मैं इस पिता का कहना मानता हूँ तो ऊपर वाले की दुआओं से वंचित होता हूँ और ऊपर वाले का कहना मानता हूँ तो देह का पिता नाराजगी प्रकट करता है। पंचो, बताओ, मैं किसका कहना मानूँ। देह के पिता से तो एक जन्म का नाता है और आत्मा के पिता से तो जन्म-जन्म का नाता है, आप ही फैसला करो, कौन-से नाते को ऊपर रखूँ। सभी ने मेरी बात को ध्यान से सुना और कहा, नाता तो भगवान का ही बड़ा है, उसी की बात मान। यह सुनकर पिताजी को क्षणिक रोष आया और उन्होंने कहा कि इसे ज़मीन या घर में कोई हिस्सा नहीं मिलेगा। मैंने प्यार से कहा – पिताजी, मैं अभी लिखकर दे देता हूँ कि मुझे न ज़मीन का हिस्सा चाहिए, न घर का। इस प्रकार फैसला हो गया। मैं यज्ञ में समर्पित हो गया। परिवार का रोष कुछ दिनों के बाद हवा हो गया। अब तो मैं जब भी घर जाता हूँ, उन्हें लगता है कोई महान अवतार हमारे घर में आ रहा है। वे बहुत प्रेम से घर की सफाई करते हैं। ढोल बजाकर गाँव के सभी लोगों को इकट्ठा किया जाता है और वहाँ प्रवचन के कार्यक्रम रखे जाते हैं। इस प्रकार भोलेनाथ भगवान को जीवन की डोर सौंपकर मैं इस भवसागर को निश्चिंतता से पार कर रहा हूँ।

लगभग 9 वर्ष दिल्ली पांडव भवन

में मुझे डबल विदेशी भाई-बहनों के लिए भोजन बनाने की सेवा मिली। इसी दौरान मैंने हिन्दी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। भोजन बनाने में कुशलता प्राप्त की। धीरे-धीरे प्रवचन करने का भी अभ्यास किया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न भाषाओं में लेख भेजने आरंभ किए। बाल्यकाल से मैंने कभी नए वस्त्र नहीं पहने थे। बाबा के यज्ञ में समर्पित होने के बाद पहली बार जब नए कपड़े पहनने को मिले तो मेरी खुशी का पारावार नहीं रहा। इतने ऊँचे ईश्वरीय परिवार का प्यार, भगवान का प्यार पाकर मुझे लगा कि मैं इस धरती पर नहीं लेकिन किसी दूसरी अलौकिक स्वर्गिक दुनिया में आ गया हूँ। इसके बाद बेहद सेवा के लिए मैं शांतिवन में भोजन बनाने की सेवाओं में नियुक्त कर दिया गया। पिछले 12 वर्षों से शांतिवन में भोलेनाथ के भंडारे की सेवाओं में हूँ। बीच-बीच में जब भी समय मिलता है तो भारत के विभिन्न राज्यों में जाकर स्कूलों में, जेलों में या अन्य संस्थाओं में भी ईश्वरीय संदेश देता हूँ। इस प्रकार मैं संगमयुगी जीवन के एक-एक पल को याद और सेवा में सफल कर रहा हूँ। **अभी तक भी मैं अपनी उस गरीबी का कृतज्ञ हूँ जिसने मुझे मेहनत का पाठ पढ़ाया और इतनी ऊँची मंज़िल तक पहुँचा दिया। मैं कृतज्ञ हूँ, प्यारे शिवबाबा का जिस करन-करावनहार ने मुझमें इतनी योग्यताएं भरीं। मैं आज जो भी कुछ हूँ उन्हीं की देन हूँ।**

(समाप्त)

शिवरात्रि – आध्यात्मिक पहलू ... पृष्ठ 15 का शेष

एक बच्चे ने पचास रुपये का नकली नोट प्रसाद की थाली में डाल दिया और कहा, कुछ देकर ही तो प्रसाद लेना चाहिए। उपस्थित लोग उसके इस भोलेपन पर हँस पड़े। प्रसाद बांटने वाले ने कहा, कोई बात नहीं, आज नकली नोट चढ़ाएगा, तो कल असली चढ़ाने की आदत भी पड़ जाएगी। हमारी कहानी भी इस बच्चे की तरह ही है। हम भी भगवान पर नकली चीज़ें अर्पण करके शिवरात्रि मना लेने का दावा करते आ रहे हैं। भगवान शिव हमारी इस नादानी को देख-देख मुस्कराते हैं कि कोई बात नहीं, मेरा बच्चा अज्ञानतावश आज ऐसा कर रहा है, पर जब ज्ञान मिल जाएगा तो अवश्य यही असली चीज़ें भी मुझ पर अर्पण करेगा। अत: सभी भक्तों से हमारा नम्र निवेदन है कि शिवरात्रि के सच्चे आध्यात्मिक रहस्य को जान, वर्तमान समय सृष्टि पर अवतरित चेतन शिव को पहचान, उनसे नाता जोड़ें। जब तक शिव पिता धरती पर कर्त्तव्यरत हैं, तब तक का सारा समय ही सच्ची शिवरात्रि है। तो यादगार में एक दिन मनाने की बजाय, शिव को जानकर उनके सान्निध्य में हर पल ही सच्ची शिवरात्रि का आनन्द लें और 21 जन्मों के लिए कालकंटक दूर, भंडारे भरपूर का वरदान प्राप्त करें।

भण्डारे कैसे भरें?

कई विदेशी लोग प्रश्न उठाते हैं कि शिव की पूजा करते हुए भी भारत के भंडारे खाली हैं और हम विदेशियों के भंडारे भरपूर हैं। हम जानते हैं कि भौतिक संपदा कई बाहर के देशों में बहुत है भले ही वे शिवरात्रि नहीं मनाते। इसका कारण यह है कि भौतिक संपदा प्राप्त करने के लिए कुछ चारित्रिक व नैतिक मूल्य आवश्यक होते हैं जिनका वे पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, समय की पाबंदी, कार्यकुशलता, कर्मठता, देश और देश की संपत्ति से प्रेम, स्वच्छता, बौद्धिक एकाग्रता, आविष्कार की प्रवृत्ति, विज्ञान के साधनों की उन्नति आदि-आदि। लेकिन उनके पास केवल भौतिक समृद्धि है, मानसिक शांति उनके पास भी नहीं है। यदि हम परमात्मा शिव द्वारा बताए गए तरीके से शिवरात्रि मनाएं तो हमारे धन-धान्य के भंडारे तो भरपूर होंगे ही, हम मानसिक शांति और स्थिरता को भी प्राप्त करेंगे। कई बार पूजा-पद्धति में भी वाममार्गीय प्रक्रिया अपना ली जाती है। कई लोग श्मशान घाट में जाकर शंकर देवता की मूर्ति रखकर अनेक प्रकार की तांत्रिक क्रियाएँ करते हैं और कई प्रकार की तामसिक ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करके किसी को गिराने, कष्ट देने या बदला निकालने का गलत कर्म भी करते हैं। पूजा में आई इस विकृति के कारण मनुष्य की स्वार्थपरता बढ़ती है। त्योहारों और उत्सवों को भी स्वार्थसिद्धि का आधार बना लेने के कारण मनुष्य अधिकाधिक पतित और कंगाल होता जाता है। अत: ऐसी वाममार्गीय प्रक्रियाओं, कर्मकाण्डों से सावधान रहने में ही हमारा कल्याण है। ❖

थको नहीं राजयोगियो ...

• ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)

मनुष्य जीवन एक लंबी यात्रा है। इस यात्रा में मनुष्य को कहीं फूल मिलते हैं तो कहीं कांटे, कहीं मित्र मिलते हैं तो कहीं शत्रु, कहीं उसे प्यार मिलता है तो कहीं दुत्कार। जीवन के उतार-चढ़ाव उसे थका देते हैं। किसी को जीवन में आने वाले विघ्न थका देते हैं, तो किसी को अपने ही प्रियजन।

कलियुग के अंत तक आते-आते प्राय: सभी मनुष्यात्माएँ थक चुकी हैं। कोई-कोई तो हिम्मत भी हार चुकी हैं, कोई निराशा के गर्त में फिसल गई हैं। यह थकान मानवीय चेहरों पर स्पष्ट दिखाई देती है। तनाव व गम थकान के प्रत्यक्ष स्वरूप हैं। मनुष्यों के चेहरों पर खुशी लोप होती जा रही है, चिन्तन का स्थान चिंता ने ले लिया है और असाध्य रोगों का प्रकोप मनुष्य को हताश कर रहा है।

मनुष्यात्माओं की यह यात्रा 5000 वर्ष तक चली। अब जबकि आत्माएँ पूर्णतया थक चुकी हैं, तब स्वयं भगवान सच्चे मित्र बनकर इस यात्रा में हमारे साथी बन गये हैं। जिन्होंने उन्हें पहचान लिया, वे उनका साथ पाकर धन्य-धन्य हो गये और उनकी जन्म-जन्म की थकान मिट गई है परन्तु जिन्होंने उन्हें नहीं जाना, वे अब भी उनकी तलाश में भटक रहे हैं और उनकी थकान दिनों-दिन बढ़ रही है।

राजयोग-पथ के राही भी थकान महसूस कर रहे हैं। वे सोचते थे कि यह खेल शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा परन्तु उन्हें लंबा इंतज़ार करना पड़ा। जीवन के संघर्षों ने इस सुगम पथ को भारी कर दिया। प्रस्तुत चर्चा में हम थकान के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डालकर उनके समाधान की बातें करेंगे।

थकान के कारण व निवारण

कलियुग के अंत तक आते-आते मनुष्य का मन अति निर्बल हो गया है परिणामस्वरूप मनुष्य ज्यादा सोचता है और नकारात्मक सोचता है। इस तरह सोचते-सोचते मन और ही निर्बल होता जाता है। निर्बल मन पर परिस्थितियों का बुरा प्रभाव पड़ता है, मनुष्य स्वयं से ही हार जाता है, वह हथियार डाल देता है और अति थकान महसूस करता हुआ कहीं-कहीं पथ विमुख भी हो जाता है।

थकाते हैं दूसरों के कटुवचन

परिवारों में, संगठनों में व संबंधों में यदि वे ही लोग हमारा अपमान करें जिन्हें हम बहुत प्यार करते हैं। उस माँ की मनोस्थिति की कल्पना करें, उस पर क्या बीतती है यदि उसके अपने ही दिल के टुकड़े उस पर कटु वाणी का प्रहार करें। जिन संतानों के लिए माँ-बाप ने रात-दिन मेहनत की, उनका दुर्व्यवहार उन्हें थका देता है। पति-पत्नी के मध्य यदि स्नेह व सम्मान

नहीं, कटु वाणी का आदान-प्रदान है तो उनका जीवन नर्क तुल्य बन जाता है। प्राय: दूसरों के असभ्य बोल जब मनुष्य की भावनाओं को व उसके अहं को ठेस पहुँचाते हैं तो वह भीतर से टूट जाता है।

क्या निवारण है इस थकान का?

यह मानसिक थकान अनेकों के लिए भयावह बन गई है। नि:संदेह राजयोग मेडिटेशन इसका सरल उपचार है परन्तु मन की चंचलता के कारण सभी इसमें सफल नहीं होते। हमें अपने मन को सरल बनाना होगा। स्वमान का अभ्यास बढ़ाना होगा ताकि हम दूसरों के व्यवहार को सहज भाव से ले सकें।

जो मनुष्य ईश्वरीय पथ पर अग्रसर हैं वे ध्यान दें। हम मनुष्यों के शब्दों पर ज्यादा ध्यान देते हैं, भगवान

के महावाक्यों पर ध्यान नहीं देते। **कोई हमें अपमानित करता है तो हम उसके एक-एक शब्द पर ध्यान देते हैं जबकि हमें ध्यान देना चाहिए भगवानुवाच पर कि उन्होंने कहा है, बच्चे, तुम्हें मान-अपमान में समान रहना है।** बस, परमात्म महावाक्य याद करते ही मन में शक्ति का संचार हो जायेगा।

मनुष्य को थकाते हैं अपने ही संस्कार

ज्यादा सोचने के संस्कार, परेशान रहने के संस्कार, चिड़चिड़ेपन के संस्कार तथा अनुमान लगाने के संस्कार – ये कुछ ऐसे संस्कार हैं जिनसे बिना कारण ही मनुष्य परेशान रहने लगता है। यूँ ही बैठे-बैठे अनुमान लगाकर वह नकारात्मक बन जाता है। अपनी भावनाओं व दृष्टिकोण को बिगाड़ लेता है। ये चीज़ें मनुष्य को मानसिक रूप से कमज़ोर कर देती हैं। कुछ लोग परिस्थितियों वश चिड़चिड़े रहने लगते हैं। इसका प्रभाव उनके दिमाग पर पड़ता है जो कि उन्हें थका देता है तथा बीमारियों को जन्म देता है। ज़्यादा सोचने की आदत तो आज के युग में भयंकर बीमारी है, यह तो मनुष्य का सर्वनाश ही कर देती है।

हमें अपनी संकल्प शक्ति को पहचानना है। यह महान शक्ति, महान विचारों से उत्पन्न होती है। हम ईश्वरीय महावाक्यों का दिन में दो बार अध्ययन अवश्य करें। अपनी व्यर्थ आदतों पर ध्यान दें। स्वयं से बातें करें, इस कला को बढ़ायें। लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इस संकल्प को सदा के लिये विदाई देकर यह सोचें कि हम अपने बारे में क्या सोचते हैं। मुक्त करें स्वयं को इन विकृतियों से और इसकी विधि है, अपने पाँचों स्वरूपों को स्मृति में लाना।

कई थके हैं बीमारियों से

लगातार बीमारियों का शिकार रहने से मन भी थक जाता है और तन भी। कुछ बीमारियाँ पूर्व जन्मों का परिणाम हैं तो कुछ वर्तमान की गलतियों का। भोजन व जीवन पद्धति पर ध्यान दें। प्रतिदिन कुछ समय शरीर को भी दें। अति महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यदि मन को हम शक्तिशाली बनाये रखें तो बीमारियाँ हमें थकायेंगी नहीं। मनुष्य पहले मन को निर्बल करता है फिर उसका आत्मविश्वास व दृढ़ता डगमगाने लगते हैं। कमज़ोर मन से, कमज़ोर तरंगें देह में व्याप्त होती रहती हैं, फलस्वरूप, शरीर और ही कमज़ोर व रोगग्रस्त रहने लगता है।

व्याधियों का समुचित इलाज भी करायें। हमारा परामर्श है कि आप प्राकृतिक चिकित्सा अवश्य करा लें। जो ज्यादा बीमार रहते हैं वे एक वर्ष में एक मास अवश्य इस चिकित्सा को अपनायें। साथ-साथ अशरीरी होने का भी अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हमें स्वमान के द्वारा अच्छी व शक्तिशाली तरंगें शरीर को देनी हैं। थकें नहीं, बीमारी आई है तो जायेगी अवश्य।

ज़िम्मेदारियाँ थका रही हैं इंसान को

धन कम व परिवार बड़ा; काम ज़्यादा, समय कम; पद बड़ा, योग्यता साधारण; दूसरों को साथ लेकर चलने की कला का अभाव; बच्चों का बुरे संग में जाना; बच्चों की अत्यधिक इच्छाओं को पूरा करना; सभी बच्चों की शादी व उन्हें ठीक से सेट करने की ज़िम्मेदारी – ये कुछ ऐसी बातें हैं जो मनुष्यों को बहुत थका रही हैं।

सरलचित्त बनें, ईश्वरीय ज्ञान लेकर उसका प्रयोग करें, भगवान को अपना साथी बना लें। ये कुछ तरीके हैं ज़िम्मेदारियों को हलका करने के। सबके सभी काम पूर्ण हो रहे हैं, यह सृष्टि-चक्र ठीक तरह से चल रहा है परन्तु मनुष्य यह सोचकर कि मैं ज़िम्मेदार हूँ, मुझे करना है .. भारी हो जाता है। यह मैं-मैं का भाव ही मनुष्य को भारी करके थका रहा है। सोचो, यदि मैं न रहूँ तो क्या यह कार्य नहीं चलेगा? अवश्य चलेगा।

मैं को स्वमान में बदलो, कुछ जिम्मेदारियाँ प्रभु-अर्पण करके चलो। 'सर्वशक्तिवान मेरे साथ है' – यह बात दिन में पाँच बार याद करो तो आपमें कार्यक्षमता दुगनी हो जायेगी। 'सब कुछ अच्छा हो जायेगा, हम कर लेंगे और सबका अपना-अपना भाग्य भी है' – इन बातों से स्वयं को हल्का करो।

विघ्न, समस्यायें :
थकान के कारण

कलि के इस महाभयावह काल में यदि किसी के ऊपर विघ्नों की बौछार होने लगे तो उस का मनोबल टूट जाता है। विघ्नों की दीवारों को तोड़ते-तोड़ते मनुष्य अत्यधिक थक जाता है। व्यापार-धंधों में विघ्न, उनमें असफलता, हानि, नुकसान और धोखा मनुष्य को थका देते हैं परन्तु आप थकें नहीं, याद रखें – जितना हम ऊँचे जायेंगे, तूफान तो ज्यादा लगेंगे ही। जिसे सफलता के चरम शिखर पर चढ़ना है उसे विघ्नों को तो पार करना ही पड़ेगा। इसलिए याद रखना है, कारण विघ्नों का नहीं है, उनके प्रति हमारे दृष्टिकोण का है। हम मान लें कि विघ्न हमारे बंद द्वार को खोलेंगे। विघ्न हमारे अनुभवों में व विवेक में वृद्धि करेंगे। अवश्य ही विघ्न हमें शक्तिशाली बनायेंगे।

जो ज्ञानयुक्त मनुष्य हैं और जिन्होंने भगवान से अपना नाता जोड़ा है उन्हें वरदाता परमपिता की ओर से दो वरदान प्राप्त हैं, प्रथम है कि तुम सर्वशक्तिवान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हो और दूसरा है, तुममें विघ्नों को नष्ट करने की शक्ति है, तुम विघ्न विनाशक हो। इन दो वरदानों को प्रतिदिन पाँच बार याद करने से आप शक्तिशाली भी बन जायेंगे तथा विघ्नमुक्त भी हो जायेंगे।

मनुष्य को थकाते हैं मनोविकार

मन की कुंठा, घृणा व नफरत, बदले की भावना और अनावश्यक इच्छाएँ व तृष्णाएँ मनुष्य को थका रही हैं। किसी को काम-वासना की इच्छाओं ने सताया, किसी को क्रोध की धधकती ज्वाला ने जलाया है। कोई मोह से थका है तो किसी को लोभ ने नचाया है। सचमुच सभी आत्माएँ थकान महसूस कर रही हैं, जिससे भी मिलो, वही अपना रोना रोता है।

हम शांत करें अपने चित्त को। हम त्याग दें अपनी तृष्णाओं को, तो जीवन की यात्रा आनन्दकारी हो जायेगी। अब पवित्र बनने का समय है, पवित्रता में ही सुख-शान्ति समाहित है। आत्मा का मूल स्वरूप ही पवित्र है। अब पुन: पवित्र बनो तो जीवन एक आनन्ददायी खेल बन जायेगा।

अनावश्यक कामनाओं के त्याग के बिना कोई भी सुखी नहीं हो सकता। घृणा, द्वेष, नफरत व बदले की भावना – इस गंदगी को मन-मंदिर में संजोने से कोई सुखी नहीं हो सकता। अपने मन में दूसरों के कल्याण की भावना को जगाओ, इससे मन स्वच्छ होगा और आप सुखों के झूले में झूल सकेंगे।

हे राजयोगियो! थको नहीं, तुम्हें तो सबकी थकान मिटानी है। सुस्त न बनो, तुम्हें तो जग को जगाना है। कमज़ोर न बनो, तुम्हें तो सबको शक्तियों की सकाश देनी है। तुम यदि रुक जाओगे तो संसार की गति ही रुक जायेगी। तुम यदि सो जाओगे तो अनेक मनुष्य अंधकार में भटक जायेंगे। उठो, समय तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। उठो, तुम्हें विश्व का कल्याण करना है; तुम विश्व के आधारमूर्त हो; तुम्हारे एक-एक कर्म का व तुम्हारे संकल्पों का प्रभाव सारे विश्व तक, सभी धर्मों की आत्माओं तक जाता है।

जीवन की समस्याओं को परीक्षा समझो। महत्त्व परीक्षा का नहीं, महत्त्व तो इस बात का है कि तुम परीक्षा में कितने नंबर लेते हो। इन सूक्ष्म परीक्षाओं को पहचानो। ये विघ्न या बातें तुम्हारे ही पूर्व के कर्मों के परिणाम हैं, इन्हें स्वीकार कर लो और याद रखो कि ये दिन शीघ्र ही पूर्ण होने वाले हैं। तुम्हारे स्वर्णिम दिन तुम्हारी राह देख रहे हैं। न निराश होओ, न उदास क्योंकि तुम भगवान के महान बच्चे हो। सारा संसार प्यासी नज़रों से तुम्हारी ओर निहार रहा है।

इसलिए हे राजयोगियो! तुम थको नहीं, न माया से, न पुरुषार्थ से। यह भी नहीं सोचो कि हम कर तो बहुत रहे हैं परन्तु कुछ मिलता नहीं। तुम्हारा अविनाशी बैंक में जमा हो रहा है। थक कर पुरुषार्थ छोड़ो नहीं। यह साधना का मार्ग लंबा है, इसमें किसी को तो तत्काल प्राप्ति हो जाती है और किसी को इंतज़ार करना पड़ता है। तुम निरंतर चलते चलो, चलते रहने से ही मंज़िल मिलेगी, रुकने से नहीं। ❖

परमार्थ के आधार पर व्यवहार को सिद्ध करना सच्चे योगी का लक्षण है

ज्ञान सागर और पानी का सागर

• ब्रह्माकुमार महावीर सिंह राजावत, इन्द्रगढ़ (कोटा)

भक्तों ने परमात्मा की तुलना सागर से की है। लगता है काफी गहराई से चिंतन-मनन करने के बाद उन्होंने सागर को परमात्मा की तुलना के योग्य समझा है। फर्क यही है कि वह पानी का सागर है और परमात्मा ज्ञान का सागर। एक है स्थूल, दूसरा है सूक्ष्म। सूक्ष्म को समझने के लिए स्थूल से ही तो तुलना की जायेगी। तुलना ऐसी ही वस्तु से की जाती है जिसे आम व्यक्ति जानता हो और तुलना इसलिए करनी पड़ती है क्योंकि उस सूक्ष्म और अतिगुह्य विषय को समझाना आसान हो जाता है। परमात्मा के स्वयं अवतरित होने के बाद और ब्रह्मामुख से अपना यथार्थ परिचय देने के बावजूद भी कितनी थोड़ी-सी मुट्ठी भर आत्माएँ हैं जो उसे वह जो है, जैसा है, वैसा समझ पाई हैं। यादगार शास्त्र महाभारत में तो लेखक ने बताया है कि केवल पाँच पांडव ही उसे जान पाये थे। यदि संसार में कोई गूढ़तम विषय है तो वह यही है कि परमात्मा का सत्य परिचय क्या है।

स्थूल सागर भी बेअन्त है, भूभाग की अपेक्षा जल कई गुना ज्यादा है। भारत देश के तीन ओर समुद्र है, अथाह जल है किन्तु भारत में लोग पानी के लिए तरस रहे हैं। किसी कवि ने कितना सुन्दर लिखा है –

'पानी में मीन पियासी,
मोहे सुन-सुन आवे हांसी।'

इस भौतिक जगत की ऐसी व्यवस्था है कि सागर के पानी का सीधा उपयोग नहीं किया जा सकता, ना खेती के काम में और ना ही पीने के काम में। यद्यपि पानी का अन्तिम स्त्रोत सागर ही है। जहाँ भी जल दिखाई देता है वह सागर की बदौलत ही है किन्तु उसके लिए समय मुकर्रर है। समय पर ही सागर से पानी की भाप बनकर बादल बनते हैं और सबको तृप्त करते हैं, सबकी प्यास बुझाते हैं। जब यह समय आता है तो सब आसमान की तरफ नज़र डालते हैं। किसान, जानवर, पक्षी आदि सभी इस समय का बड़ी बेताबी से इंतज़ार करते हैं। पपीहा स्वाति की एक बूंद के लिए इस घड़ी का इंतज़ार करता है। मोर पक्षी मैं आऊँ,मैं आऊँ करते हैं व मेंढ़क टर्राने लगते हैं। ये सब आम लोगों को यही संदेश देते हैं कि चिन्ता मत करो, जिसका तुम इंतज़ार कर रहे हो, वह अब आने वाला है, पानी बरसने वाला है। इस समय जिसमें जितनी क्षमता होती है, वह उतना जल अपने अन्दर समा लेता है, भर लेता है। नदियाँ, तालाब, कुएँ, बावड़ियां सभी तृप्त हो जाते हैं, फिर वे वर्षभर इस जल से लोगों की सेवा करते रहते हैं। कोई गंगा बन जाती है और कोई यमुना बनकर कलकल की ध्वनि करती हुई प्रवाहित होती रहती है। भक्त लोग अपने पाप धोने गंगा में ही जाते हैं, सागर में नहीं। पतित पावनी गंगा ही कहलाती है, सागर नहीं। स्टीमरों, जहाज़ों आदि से कई दिनों तक समुद्री यात्रा करने वाले, प्यास लगने पर सागर का नहीं बल्कि साथ ले जाया हुआ पानी ही पीते हैं।

यही व्यवस्था ज्ञान सागर के ज्ञान की भी है। **ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव परमधाम में निवास करते हैं और आत्माएँ भी वहीं निवास करती हैं। परंतु वे अपनी प्रिय संतान आत्माओं को ज्ञान रूपी अमृत का पान वहाँ नहीं करा सकते। उसके लिए उन्हें मुकर्रर समय पर सृष्टि पर अवतरित होना पड़ता है। कल्प के अन्त में, सतयुग एवं कलियुग के बीच के पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही उनका अवतरण होता है और ज्ञान सागर से ज्ञान की बरसात होती है। इस ज्ञान-बरसात से सृष्टि में फिर से नया जीवन, नई रौनक आ जाती है, जीर्ण-शीर्ण कलियुगी सृष्टि परिवर्तित होकर स्वर्ग बन जाती है। स्थूल बरसात का समय वर्ष में एक बार और ज्ञान-बरसात पूरे कल्प में एक बार।** भक्तों ने बड़ा ही सुंदर चित्र बनाया है इस विधि-विधान को समझने के लिए। शंकर की जटाओं से, मस्तक से गंगा को निकलते हुए दर्शाया है। बड़ी सुंदर कहानी बनाई है कि भागीरथ की तपस्या पूरी हो जाने के फलस्वरूप ऊपर आसमान से गंगा इस धरती पर आती है और शंकर की जटाओं में से

(शेष... पृष्ठ 27 पर)

दिसम्बर 08 से आगे ...

असत्य से सत्य की ओर

• ब्रह्माकुमार सत्यवीर सिंह डागर, दिल्ली

(अब तक आप पढ़ चुके हैं कि लेखक को अमृतवेले ईश्वर मिलन की अच्छी-अच्छी अनुभूतियाँ होने लगीं और उनके संशय मिटते गए। मधुबन वरदान भूमि में पहुँचकर जहाँ बाबा के असीम प्यार की अनुभूति की, वहीं बाबा से स्पष्ट सूक्ष्म संवाद (रूहरिहान) करने की शक्ति भी मिली। बाबा की शिक्षाओं ने नौकरी को भी ईश्वरीय सेवा का साधन बना दिया। ईश्वरीय ज्ञान से कर्मों की गहन गति समझ में आ गई जिससे क्रोध छूट गया और प्रेम की शक्ति से कार्य बनने लगे। पढ़िए, आगे क्या हुआ ..... सम्पादक)

दृष्टि पाकर भीड़ वापस चली गई

दिल्ली में माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर एम.सी.डी. द्वारा चल रही सीलिंग और तोड़-फोड़ की कार्यवाही के विरोध में भाजपा द्वारा अक्तूबर 2006 में दिल्ली बंद का आह्वान किया गया था। विकास मार्ग शकरपुर के दुकानदारों ने सारी मार्केट बंद कर दी, मार्ग को जाम कर दिया और सड़क पर बैठ गये। एस.एच.ओ. और ए.सी.पी. शकरपुर मौके पर थे। मधुबन चौक से आगे प्रीत विहार के एरिया में विकास मार्ग की मार्केट खुली थी और सब कुछ सामान्य था। जब उन लोगों को यह मालूम हुआ तो करीब 500 लोग हाथों में लाठी-डंडे लिये हुए, नारे लगाते हुए प्रीत विहार जाने के लिए मधुबन चौक की तरफ बढ़े। मैं पहले से ही अपनी फोर्स के साथ मधुबन चौक पर था।

इसी बीच एस.एच.ओ. शकरपुर ने वायरलेस पर सूचना दी कि भीड़ बहुत उत्तेजित है और पथराव कर सकती है। डी.सी.पी. साहब की तरफ से मुझे आदेश मिला कि हर सूरत में लोगों की जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये और ज़रूरी कार्यवाही की जाये। भीड़ के हिसाब से मेरे पास फोर्स कम थीं, दिल्ली बंद होने के कारण फोर्स कहीं और से भी नहीं मिल पा रही थी।

मुझे बाबा की समझानी याद आई कि बाबा की याद में तीखी दृष्टि किसी को देंगे तो वह गोली का काम करेगी। मैं एक ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर बाबा की याद में उस भीड़ को दृष्टि देने लगा। भीड़ आगे बढ़ती गई। जब भीड़ थोड़ा और आगे आई तो मैंने अपनी दृष्टि उन लोगों पर केंद्रित की जो भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ बेकाबू हो जायेगा।

तभी मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि बाबा मेरे कंधे पर हाथ रखकर मेरे साथ खड़े हैं और कह रहे हैं कि बच्चे, घबराओ मत! मैं तुम्हारे साथ हूँ। भीड़ मधुबन चौक पर आ गई। चौक पर खूब हंगामा किया। वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर आ गये। अफरा-तफरी मची हुई थी। सब इधर-उधर भाग रहे थे। मैं एकदम शांत भाव से उन लोगों को दृष्टि दिये जा रहा था। इसी बीच वो लोग चौक से उठे और नारे लगाते हुए वापस शकरपुर की तरफ चले गये। सारा दिन शकरपुर के एरिया में हंगामा होता रहा। खूब जमकर पथराव हुआ, बसों के शीशे टूटे, पुलिस के साथ झड़प भी हुई, लाठी और आँसू गैस भी चली परन्तु प्रीत विहार में पत्ता भी नहीं हिला। देखो, कमाल है बाबा की!

मैराथन दौड़

मैं पुरुषार्थ भी यथाशक्ति कर रहा था और सेवा भी कर रहा था परन्तु फिर भी मेरे मन में यह विचार चलता था कि मैं तो ज्ञान में बहुत देर से आया हूँ फिर भला मैं आगे कैसे आ सकता हूँ। आगे तो वही आयेंगे जिन्होंने यज्ञ की बहुत काल से सेवा की है और जिन्होंने बहुत काल का पुरुषार्थ किया है। इस बात से मैं कभी-कभी बड़ा असहज महसूस करता था। सोचता था कि मैं यज्ञ में पहले से क्यों नहीं आया?

मैंने एक रात को सपना देखा कि मैराथन दौड़ हो रही है। बहुत भाई-बहनें, पीछे से बहुत दूर से दौड़ते आ रहे हैं और कई भाई-बहनें बीच रास्ते में उस दौड़ में शामिल हो रहे हैं। मैं सड़क के किनारे फुटपाथ पर खड़ा होकर दौड़ को देख रहा हूँ। देखते-देखते सारी दौड़ मेरे सामने से गुज़र गई और मैं उसी स्थान पर खड़ा-खड़ा देखता ही रहा। जब दौड़ बहुत दूर

निकल गई तब मेरे मन में आया कि मुझे भी दौड़ना चाहिए। मैंने भी दौड़ना शुरू कर दिया। मैं बहुत पीछे दौड़ लगा रहा था। आगे जाकर मैंने देखा कि दौड़, रेड लाइट ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी हुई है। उस दौड़ में हज़ारों की संख्या में भाई-बहनें थे।

मैं पीछे से आया पर रुका नहीं बल्कि दूसरी साइड से पूरी ताकत से दौड़ लगा दी ताकि ग्रीन लाइट होने से पहले ही मैं आगे पहुँच जाऊँ। मुझे दूसरी तरफ से भागता हुआ देखकर कइयों ने शोर भी मचाया परन्तु मैं उनकी परवाह किये बगैर तेज़ी से दौड़ता गया। मुझे देखकर कई भाई जो लाइन में खड़े थे, लाइन तोड़कर मेरे पीछे दौड़ पड़े। इसी बीच लाइट ग्रीन हो गई। इस प्रकार मैं आगे आने वालों में शामिल हो गया। रेड लाइट से थोड़ा आगे ही फिनिशिंग प्वाइंट था। जब दौड़ समाप्त हुई तो मैं भी फुल मार्क्स से पास होने वालों में था।

इस सपने से मुझे यह समझ में आ गया कि **बाबा जो कहते हैं कि लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट, यह सिर्फ कहने मात्र नहीं कहते बल्कि यह बात एकदम सौ प्रतिशत सही है। बाद में आने वालों के लिए भी अभी मार्जिन है। उन्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए बल्कि पूरी ताकत से पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए।** उन जैसे बच्चों को चांस देने के लिए ही बाबा ने महाविनाश को रोका हुआ है। एक बात और, रेड लाइट बहुत देर के लिए नहीं होती। वैसे भी यह रेड लाइट फिनिशिंग प्वाइंट से थोड़ी ही पहले थी। इसका मतलब है कि अंतिम समय दूर नहीं है। अब अलबेलापन नहीं। जो पूरी ताकत से और युक्ति से पुरुषार्थ करेंगे उनको आगे आने की पूरी-पूरी मार्जिन है। दूसरी बात, **जो पहले से भी आगे हुए हैं और अपने पुरुषार्थ से संतुष्ट होकर रेड लाइट पर निश्चिन्तता से खड़े हुए हैं, उनको भी और आगे जाने का चांस है। दौड़ अभी खत्म नहीं हुई है।**

बाबा ने दोस्ती निभाई

एक बार थाना प्रीत विहार में, क्षेत्र के कुछ सम्मानित व्यक्ति मुझसे किसी काम से मिलने आये। मैंने उनकी बात सुनने के बाद अपने ऑफिस में ही 10-15 मिनट ईश्वरीय ज्ञान सुनाया। उन्हें बहुत अच्छा लगा। यह देखकर उन्हें और भी अच्छा लगा कि ज्ञान सुनाने वाला एक पुलिस अफसर है। उनमें से एक व्यक्ति लायन्स क्लब का मैम्बर था। उसने कहा कि एक महीने बाद लायन्स क्लब की सालाना मीटिंग होनी है, आप उसमें आयें और सबको यह ज्ञान सुनायें। मैंने कह दिया कि ठीक है, आप बुलायेंगे तो मैं ज़रूर आऊँगा।

करीब एक महीने बाद मुझे निमंत्रण पत्र मिला, उसमें मेरा नाम विशेष अतिथि के रूप में लिखा था। मुझे बोलने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया था। मैंने एक सुन्दर भाषण तैयार किया और कई बार बोल-बोलकर प्रैक्टिस भी की। मैं सोचता था कि बाबा ने बहुत बड़े-बड़े लोगों की सेवा का मौका दिया है, कहीं कोई कमी न रह जाये। मैं सही समय पर मीटिंग में पहुँच गया। आलीशान स्टेज पर करीब 15 लोग बैठे थे जिनमें लायन्स क्लब के अधिकारीगण, दिल्ली सरकार के मंत्री डॉ. ए.के.वालिया, कई एम.एल.ए., एक्स. मेयर इत्यादि थे। मुझे भी विशेष अतिथि के रूप में स्टेज पर स्थान दिया गया।

मीटिंग की कार्यवाही चलते रात के 10.30 बज गये। लोग खाने के लिए शोर मचाने लगे। वहाँ का माहौल देखकर मुझे लगा कि मेरा बोलने का नम्बर शायद मुश्किल ही आयेगा। इसी बीच एक भाई ने धीरे से मेरे कान में कहा कि भाई साहब, मैं माफी चाहता हूँ, प्रोग्राम काफी लेट हो गया है। आप देख ही रहे हैं कि लोग कैसे बेचैन हो रहे हैं। हम आपको 15 मिनट का समय नहीं दे पायेंगे। आपको केवल 5 मिनट का समय मिलेगा।

यह कहकर भाई तो चला गया मगर मैं गहरी सोच में पड़ गया। जो भाषण मैंने 15 मिनट के हिसाब से तैयार किया था उसे 5 मिनट में कैसे सुना दूँ। कहाँ से शुरू करूँ? कहाँ खत्म करूँ? कुछ समझ में नहीं आया मुझे; यह ख्याल भी चल रहा था कि यदि मैं ठीक से अपनी बात नहीं कह सका तो इतने बड़े-बड़े लोगों में, इतनी बड़ी सभा में सर्विस की बजाय डिस सर्विस हो जायेगी। मैं विशेष अतिथि था इसलिए मंच से उठकर भी नहीं जा सकता था। मैंने बुद्धिमानों की बुद्धि प्यारे-मीठे बाबा को याद किया। मैंने कहा, बाबा, अब तो लाज़ आपके ही हाथों में है।

इसी बीच स्टेज सेक्रेटरी ने मुझे बोलने के लिए आमंत्रित कर लिया। उस भाई ने फिर से याद दिलाया कि भाई साहब, केवल 5 मिनट, इससे ज्यादा नहीं। स्टेज सेक्रेटरी ने माइक मुझे सौंपते हुए भी यही बात धीरे से कान में कही। मुझसे पहले एक वक्ता ने मंच से बोलते हुए कहा था कि लायन्स क्लब दोस्तों की क्लब है। यह दोस्तों की महफ़िल है। आज की दुनिया में जहाँ सच्चे दोस्त बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, हम दोस्तों का क्लब खूब फल-फूल रहा है। मैंने बोलने से पहले मौन भाषा में प्यारे बाबा का आह्वान किया और अपनी बात यहीं से शुरू की। मैंने कहा, दोस्तो! आपने मुझे अपनी दोस्ती के काबिल समझा, मैं आप सबका आभारी हूँ। अभी एक भाई ने कहा कि सच्चे दोस्त बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। यह बात सही भी हो सकती है परन्तु कई बार ऐसी परिस्थितियाँ भी होती हैं कि दोस्त चाहते हुए भी आपकी मदद नहीं कर सकता। कोई भी दोस्त हर समय और हर परिस्थिति में दोस्ती निभाने में सक्षम नहीं हो सकता परन्तु **मेरा एक ऐसा दोस्त है जो हर समय, हर परिस्थिति में दोस्ती निभाने में सक्षम है। दुनिया में दोस्त स्वार्थी भी होते हैं, धोखेबाज़ भी होते हैं परन्तु मेरा दोस्त सदा ही नि:स्वार्थ और वफादार है। सारी दुनिया धोखा दे जाये परन्तु वो कभी धोखा नहीं दे सकता।** अन्य कोई दोस्त हर समय साथ नहीं रह सकता परन्तु मेरा दोस्त हर समय मेरे अंग-संग है। सब लोग मेरी तरफ आँखें फाड़कर देखने लगे कि कहाँ है वो दोस्त। मैंने ऊँची आवाज़ में पूछा, आप ऐसे दोस्त से मिलना चाहते हो? सभा से जोर से आवाज़ आई, हाँ, हाँ, कहाँ है वो? मैंने कहा, वो है खुदा दोस्त, हम सभी आत्माओं का निराकार पिता परमात्मा शिव बाबा।

इतना कहने के बाद मुझे लगा कि जैसे मैं आत्मा मंच पर एक साइड में खड़ी हूँ और मेरा स्थूल शरीर माइक पर भाषण दे रहा है। मैं जानता हूँ, वो प्राण प्यारे शिव बाबा बोल रहे थे और मैं एक तरफ खड़ा-खड़ा सुन रहा था। कितना सुन्दर बोला, मैं वर्णन नहीं कर सकता। अगर मुझे 15 मिनट का समय मिला होता, तो भी मैं इतना सुन्दर नहीं बोल सकता था। भाषण समाप्त हुआ तो तालियों की गड़गड़ाहट से सारी सभी गूँज उठी। वो लोग समझ रहे थे कि मैंने बहुत अच्छा बोला। बहुतों ने मेरे पास आकर मुझे व्यक्तिगत रूप से बधाई दी। उन्हें क्या मालूम कि यह कार्य मेरा खुदा दोस्त खुद आकर कर गया। इस सेवा के कारण बाद में और भी कई स्थूल सेवाएँ हुईं।

क्रमश:

ज्ञान सागर और .... पृष्ठ 24 का शेष

होकर निकलती है। फिर इस सृष्टि में अज्ञान से मूर्छित पड़े लोगों को ज्ञानामृत पिलाकर नया जीवन प्रदान करती है। परमात्मा पिता भी, प्रजापिता ब्रह्मा (भागीरथ) की 63 जन्मों की भक्ति पूरी होने पर उनके ललाट में अवतरित हो जाते हैं। ज्ञान सागर शिव पिता भागीरथ ब्रह्मा द्वारा ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर ज्ञानाभाव में माया से मूर्छित आत्माओं को नया दिव्य जीवन प्रदान करते हैं। संगमयुग में यह ज्ञान अपने शुद्ध रूप में होता है परंतु द्वापर और कलियुग में इसमें मिलावट होकर आटे में नमक जितनी सत्यता रह जाती है जैसे कि गंगा भी मैली होते-होते उसकी शुद्धि अल्प रह गई है।

स्वाति नक्षत्र में निकली एक बूंद जब केले के पत्ते पर पड़ती है तो कपूर; सीप के मुंह में पड़ती है तो मोती और सर्प के मुंह में पड़ती तो ज़हर बन जाती है। ठीक उसी प्रकार से ज्ञान सागर का सत्य ज्ञान भी भिन्न-भिन्न बुद्धि रूपी पात्रों में, भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव दिखाता है। जब किसी सच्चे प्रभु-प्रेमी को मिलता है तो वह कौड़ी से हीरा बन जाता है। यदि विकारों में खोखली हुई बुद्धि रूपी पात्र में गिरता है तो संशय के कारण वह विरोध भी करता है। इसलिए कहावत है – 'शेरनी का दूध सोने के पात्र में ही ठहरता है'। यह ज्ञान की बात है अन्यथा शेरनी का दूध निकालकर उसका मक्खन या घी थोड़े ही बनाया जाता है।

ज्ञान की तुलना अमृत से या जल से की गई है। यह मात्र तुलना है। ज्ञान कोई जल नहीं, दोनों के स्रोत भी भिन्न हैं। जल का स्रोत सागर तथा ज्ञान के स्रोत ज्ञान सागर परमात्मा हैं। महिमा जितनी भी की गई है वह ज्ञान की ही है, जल की नहीं। ❖

मृत्यु पर विजय

• ब्रह्माकुमार मुकेश, वाराणसी

आज मनुष्य इंद्रियों के जगत में इतना अधिक आसक्त है कि वह इसे छोड़ना नहीं चाहता। सौभाग्य से हर एक व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय आता ही है जब उसे संकल्प उठता है कि क्या मृत्यु के बाद भी कोई जीवन है? कुछ लोग परेशानी पैदा करने वाले ऐसे प्रश्नों की ओर से आँखें मूँदने की चेष्टा करते हैं परन्तु जैसे-जैसे मृत्यु नजदीक आती है, यह प्रश्न अवश्य सिर उठाने लगता है कि क्या इस जीवन के पार भी कुछ है? इस सम्बन्ध में ऋषि, महर्षि, महापुरुषों, विद्वानों तथा दार्शनिकों ने चिन्तन के द्वारा मानव को मृत्यु के भय से मुक्त करने का प्रयास किया लेकिन यह भय खत्म न हो कर और भी भयंकर रूप धारण करता जा रहा है। मृत्यु के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वान वेकन का कथन है कि 'व्यक्ति मृत्यु से ऐसे डरता है जैसे छोटा बच्चा अंधेरे में जाने से डरता है।'

यूनान के दार्शनिक सुकरात से यह पूछे जाने पर कि आपको मृत्यु से डर क्यों नहीं लग रहा, उत्तर मिला, मुझे बड़ा आनन्द मिल रहा है कि मैं इस पंच भौतिक शरीर रूपी पिंजड़े से अब मुक्त हो रहा हूँ।

अनेक डॉक्टरों द्वारा यह प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है कि मृत्यु एक जैविक मूर्च्छा है। अमेरिका में सेन फ्रांसिस्को के डा. जेरम एन्डरसन ने एक नौजवान से वायदा करवाया था कि यदि वह उनसे पहले स्वाभाविक रूप से मरे तो मृत्युकालीन वेदना का अंकन करने की चेष्टा करे। मरते समय उस नौजवान के शब्द थे, 'मुझे लग रहा है कि मैं मूर्च्छित हो रहा हूँ।'

कुछ समय पहले तक भौतिकवादी मनोविज्ञान की मान्यता थी कि मृत्यु, व्यक्ति और व्यक्तित्व दोनों को समाप्त कर देती है परन्तु मनोविज्ञान की नवीन शाखा द्वारा प्राप्त तथ्यों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मृत्यु केवल स्थूल शरीर को ही समाप्त कर सकती है। मृत्यु के पश्चात् भी आत्मा इस संसार में व्यक्तियों पर प्रभाव डालती है।

डॉ. जे. वी. राइन ने अपनी पुस्तक 'न्यू वर्ल्ड ऑफ माइन्ड' में कहा है कि 'मनुष्य के अन्दर भौतिक नियमों से परे कार्य करने वाली चीज़ है जिससे आध्यात्मिक नियमों का अस्तित्व स्पष्ट है। इन्द्रियजनित ज्ञान एवं अनुभव तो बहुत ही सीमित है। आत्म-ज्ञान तथा अनुभव का क्षेत्र इन्द्रिय ज्ञान एवं अनुभव के क्षेत्र से कहीं विशाल है। आत्मा समस्त वासनाओं सहित सूक्ष्म शरीर को आधार बनाकर स्थूल शरीर में विद्यमान रहती है और अपनी वासनाओं की पूर्ति स्थूल शरीर के माध्यम से इस संसार में करती रहती है। कभी-कभी स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने के पश्चात् आत्मा सूक्ष्म शरीर के द्वारा किसी अन्य शरीर को आधार बनाकर अपनी वासनाओं की पूर्ति करती है। इस तरह की बातें संसार में हमें अक्सर देखने और सुनने को मिलती रहती हैं।'

स्वयं को आत्मा समझकर, परमात्मा ने जो स्वमान हमें याद दिलाये हैं उन्हें स्मृति में रखकर, संसार को खेल के रूप में देखते हुए हम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। भगवान कहते हैं, **मीठे बच्चे, यह जीवन एक नाटक है। तुम एक एक्टर हो और इस सृष्टि-मंच पर नाटक कर रहे हो।**

आज संसार में भौतिकता का रूप बहुत ही व्यापक हो जाने के कारण सबकुछ शरीर पर ही आकर खत्म हो जाता है। भौतिकवादियों की तरह स्वयं को मृत्यु के द्वारा समाप्त हुआ मान लें तो हमारे प्रयत्नों और इच्छाओं का कोई फल नहीं रह जाता। इस रूप से तो नैतिक उच्च व्यक्तित्व का विकास करना भी व्यर्थ सिद्ध होता है। मृत्यु के बाद कुछ नहीं रह जाता, ये शब्द उन लोगों के लिए हैं जो अध्यात्म के रास्ते पर एक कदम भी नहीं चलते हैं। अगर मृत्यु के बाद कुछ नहीं रहता तो इतनी तपस्या, इतना त्याग कोई क्यों करते हैं? स्वयं को आत्मा न समझ सिर्फ शरीर समझने से तो जीवन ही मूल्यहीन हो जाता है। आत्मा को

मृत्यु समाप्त नहीं करती। मृत्यु तो एक ऐसा परिवर्तन है जिसमें आत्मा एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में भी कर्म के आधार पर क्रियाशील रहती है।

आधुनिक युग में परामानसिक अनुसंधान और परामनोविधा की खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि शरीर के अन्दर एक ऐसी वस्तु है जो प्रकृति, शरीर, समय और भौतिक सीमाओं से परे है। श्रीमद्भगवद्गीता शास्त्र में लिखा है –

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय
जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानि देही।।

भावार्थ है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र को त्यागकर नये वस्त्र को धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। अत: आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। पूर्व जन्मों के कर्मों के परिणामों पर ही आत्मा के नये शरीर का निर्माण होता है। आत्मा शरीर छोड़ते समय मन-बुद्धि की शक्ति से, पूर्व किए गये कर्मों के आधार पर सूक्ष्म शरीर की रचना कर लेती है और कुछ समय तक सूक्ष्म शरीर में रहकर अपने नये शरीर का निर्माण कर लेती है और पुन: इस संसार में प्रकट होती है। श्रीमद्भगवद्गीता में यह भी कहा गया है – **अव्यक्तादीनि भूतानि**
व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र
का परिदेवना।।

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले बिना शरीर वाले ही हैं और मरने के बाद भी बिना शरीर वाले ही हैं। केवल बीच में ही शरीर वाले प्रतीत होते हैं।

सभी कथनों का अन्तिम सारांश यह है कि इस भौतिक शरीर में, भौतिक तत्वों से परे आत्मशक्ति विद्यमान है जो मृत्यु के द्वारा समाप्त नहीं होती है। मृत्यु का भय सिर्फ वे ही अनुभव करते हैं जो देह अभिमान, अधिक वाचा, त्याग के अभाव, क्रोध, स्वार्थ आदि में प्रवृत्त रहते हैं और परमात्मा के साथ सम्बन्धों को अमान्य करते हैं। मृत्यु का स्मरण विवेकशील व्यक्ति को पुण्य की तरफ अग्रसर करता है। यदि स्वस्थ, सुखी, संपन्न जीवन जीना एक कला है तो खुशी-खुशी मृत्यु का आलिंगन भी एक कला है। मृत्यु, भय का रूप लिए हुए नहीं बल्कि एक महोत्सव का रूप लिए हुए हो। **मृत्यु पर विजय पाना सिर्फ भावना के आधार पर नहीं हो सकता, इसके लिए जरूरी है कि हम अपने मन, बुद्धि सहित इन्द्रियों की प्रकृति को समझें। मैं आत्मा हूँ, मृत्यु तो सिर्फ एक जैविक परिवर्तन है। यह जैविक परिवर्तन इस सृष्टि का नियम है, जो मेरे लिए ही नहीं, पूरे विश्व के लिए आवश्यक है। मैं इस सृष्टि रंगमंच पर अनेक नाम, रूप, पद लेकर पार्ट अदा करता आया हूँ, मैं अमर पिता की अमर संतान हूँ – इस स्मृति को बनाकर रखें तो मृत्यु का भय निकल सकता है।** ❖

शिव जयंती

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)

शिव अवतरण की वेला ही शिवजयंती होती है,
दिखने में दिवस, पर देखना, हर ओर घोर रात्रि होती है।
मिटावे हर दिल की रात्रि वो शिवरात्रि होती है,
आए हैं शिव ज्योत धरा पे, मिलके, भीतर की रात मिटानी होती है।

व्यर्थ नकारात्मक संकल्पों की रात डराती,
ईश्वरीय ज्ञान की व्यवहारिकता खुशहाल बनाती।
सुखद सुहानी आत्मिक शान्ति की चाहत के राही,
भर ले सुभावों से, ले शुद्ध मनसा की सर्व प्राप्ति
श्रेष्ठ कर्मों से अज्ञान की रात मिटानी होती है
मिटावे जो भीतर की रात वो ही शिवरात्रि होती है

पढ़े वेद-शास्त्र, जागरण ऊपर से, पर अंदर नींद होती है
मिटे देह-अभिमान, पंच विकार जब 'योग' से प्रीत होती है
मिटावे रात्रि हर दिन-हर दिल की, वो आत्मा मनजीत होती है
समझे राज़, करे प्रयोग वो ही जगतजीत होती है
शिव अवतरण की वेला ही शिवजयंती होती है।